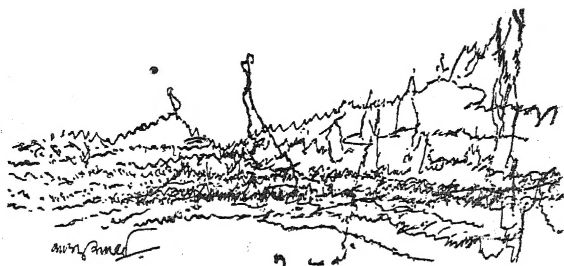
अथवा



आवरण : रंजन घोष/अलंकरण : भाऊ समर्थ/प्रथम संस्करण—१९६८ पार्वती प्रकाशन, मदारीगेट, बरेली से प्रकाशित/शीलमोहन, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १३ मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित/ आवरण मुद्रण : देशसेवा प्रेस, इलाहाबाद

श्यामनारायण बैजल
के लिए



शुरू की स्थितियों में एक अनिबार्य तात्कालिकता के साथ मुझे अपने मंच की भूमिका एक अलग दिशा अन्वेषण के साथ प्रस्तुत करना, अभिव्यक्ति के सवाल पर बेहद ज़रूरी लगा था । मेरे लिए अब यह क़तई स्पष्ट है कि तात्कालिक होना या न होना अपनी उजागर होती स्थिति के प्रति विरोध और समर्थन के बीच एक नई शुरूआत है । इसे प्रारम्भिक स्तर पर अपने अन्दर घटती हुई काल सापेक्ष अनितार्यता के बजाय अगर किसी दूसरी ज़मीन में स्वीकार किया गया तो बेशक वास्तविक स्थिति के प्रति यह स्वीकार नितांत अप्रामाणिक ही साबित होगा । लेखन के प्रारम्भ से लेकर अब तक सिर्फ़ अपनी भूमिका के प्रति ही मैं सजग हो रह पाया हूं । इस सजगता का अर्थ अगर दंभ से न लिया जाए, तो यह मेरी आश्वस्ति भी है । अपने व्यक्तिव के अलग-अलग पक्षों के विश्लेषण या उसके लिए सफ़ाई देने की ज़रूरत मैंने कभी नहीं महसूस की । अभी भी नहीं करता । लेकिन स्थितियों का

मूल्यांकन मेरी अनुभूतियों के दायित्व के लिए बेहद ज़रूरी और अनिवार्य महसूस होता है ।

इसी तरह के एक निहायत मामूली दिन, हॉलैण्ड हॉल से घायल होकर नैनी सेण्ट्रल जेल तक जाते हुए अपनी जिन्दगी और अपने दायित्व के प्रति मेरी भूमिका क्या हो सकती है, एक सवाल के रूप में मेरे लिए स्पष्ट हुई थी। मेरा क़तई निरपराध होना इस बात का ज़बरदस्त सबूत था कि हमारे पर्यावरण की संरचना में एक ग़ैरमुनासिब परिवर्तन आ गया है। जो भी हो, उसके लिए महज़ मैं और हम ही ज़िम्मेदार हैं, कोई तीसरा नहीं।

कहानी के रूप या श्रेणी विन्यास का आदी मैं कभी नहीं रहा। अपने अन्दर रोज़ नए सिरे से जन्म लेती परिभूमि के साथ अपने दायित्व को स्थापित करने के अलावा मेरी कोई दूसरी अनिवार्यता नहीं है। यहां कथा के धरातल पर अपने व्यक्तित्व का सवाल उठ सकता है लेकिन बेशक इस तरह का कोई भी सवाल मेरे लिए चिंत्य हर्गिज़ नहीं साबित होगा। अपनी सारी अनिवार्यता और वैकल्पिकता के बीच सिर्फ इतना सर्वेक्षण अपने लिए या अपने ही विरुद्ध कर पाता हूं कि महज़ अपनी महसूस की गई ज़मीन के अलावा शब्दों का कोई और दूसरा पीठस्थान मेरे लिए नहीं हो सकता। अपने लिए किसी तरह के निश्चित 'कैनवस' या उस तरह की कोई भी चीज़, सम्पूर्ण कालसापेक्षता के साथ मुझे जिस प्रत्यय का बोध कराता रहा, मेरे लिए बेशक वह एक कालातीत अनिवार्यता है। और इसके विपरीत अपनी सारी प्रतीकात्मकता के पक्ष या विरोध में अपने को उपस्थित कर देना या किसी तरह की सफ़ाई देना अपने क्लैवत्व के संरक्षण में एक बढ़िया क़दम हो सकता है लेकिन प्रामाणिक लेखन की दिशा में हर्गिज़ नहीं।

समय-समय पर लगातार मैं महसूस करता रहा हूं कि अपने अन्दर निरंतर घटती हुई घटनाओं के सर्वेक्षण में यह सर्वथा वैयक्तिक दायित्व है कि सार्वकालिक भूमिकाओं के प्रति अपने को सम्बद्ध न महसूस कर, पूरे दायित्व के साथ स्वयं को अपने समय के प्रति पूरी सामर्थ्य के बीच सचेत रखूं। इस संदर्भ में भी अपनी भूमिका ही मेरे अन्वेषण की पीठिका रही है।

आश्वति के बीच अक्सर मुझे यह भी मी महसूस हुआ है कि घटनाओं की कालातीत सत्यता, अपनी आस्था के साथ मेरे लिए एक विशिष्ट ज़मीन है। लेकिन इसके प्रति अपना उत्तरदायित्व विशिष्टता के प्रश्न पर और भी अधिक आभिजात्यपूर्ण साबित हुआ है। घटनाओं के सर्वेक्षण में अपने को मुक्त और निरपेक्ष रखने के लिए शुरू से ही मैं अपने दायित्व के प्रति सचेत रहा हूं। कभी-कभी परिस्थितियों के वैभिन्य से यह भी अहसास होने लगा है कि इस तरह की निरपेक्षता अंततः अपने लिए ख़ुद को साधनहीन और असमर्थ्य करार देने ही के बराबर होगा। लेकिन दायित्व की भावना को अगर डींग न समझा जाए तो अभी भी अपने को निरपेक्ष रखने में मैं क़तई विचलित नहीं हूं।

संकलित कहानियों में से कुछ, पत्रिकाओं में प्रकाशित होते वक्त जिस रूप में थीं, संकलन में शामिल करते वक़्त उनमें किंचित परिवर्ततन और संस्कार के बाद हू-बहू उसी रूप में नहीं रहीं रह गईं। लेकिन यह परिवर्तन संकलन के लिए कहानियां एकत्रित करते वक़्त मुझे एक विशेष अनिवार्यता और अपने ऊपर आए दायित्व ही महसूस हुए हैं।

प्र. कु. व.

क्रम

•

अब मैंने इस बात के लिए अपने को तैयार कर लिया था कि ज़रूरत पड़ने पर पूरी ताक़त के साथ छलांग मार सकूं। ज़ाहिर है, ऐसी हालत में मेरे मुंह से एक अजीब क़िस्म की चीख़ निकल जाएगी और तब मैं एकदम बिखरने लगूंगा। इस वक़्त अगर मेरे पिता यहां होते तो शुरू में तो वे सारी घटनाओं को एक ख़ास अन्दाज़ से घूरते रहते और फिर एकाएक बेहोश हो जाते। बेहोश होना उनकी बहुत सारी मजबूरियों में

से एक है लेकिन उनकी यह स्थिति मेरे लिए एक खास तकलीफ है। ऐसा अक्सर हो जाता है कि शुरू में देर तक 'बोल्ड' रहने के बाद अचानक उनमें लिजलिजापन छाने लगता और तब उसके कुछ ही देर बाद वे सिर थाम कर ज़मीन पर बैठने लगते। उनके चेहरे की पेशियां तब ज़ोरों से पकड़ने लगतीं और समूचा शरीर बहुत जल्द सुर्ख होने लगता। यह सब मेरी तकलीफ़ है। ऐसी हालत में कभी-कभी ऐसा लग जाता, गोया यह उनकी खुदकशी की एक कोशिश हो।...लेकिन मैं इस बात से वाकिफ़ हूँ कि उनमें इतनी हिम्मत नहीं है कि वे ऐसी कोई खुराफ़ात कर सकें। मेरा ख्याल है, ऐसी किसी हरकत में शामिल होने से भी वे घबराएँगे और तब आखिर में कुछ ऐसा कर देंगे, जिसकी कतई उम्मीद नहीं होगी।

मैं दीवार के कोने तक आ गया था और अब पूरी तरह सतर्क हो गया था कि उन लोगों पर हमला कर सकूं। लेकिन हमले की बात याद आते ही मैं अपनी हास्यास्पद स्थिति पर तरस खाने लगा था। वैसे मैं जानता हूं, ऐसी हालत में अपने को एकदम संज़ीदा कर लेना चाहिए और कोई ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि जिससे खुद को बचा लेने में आसानी रहे।... दरअस्ल ऐसी हालत में मैं इस क़दर डर जाता हूँ कि किसी पर हमला करने की बात सोची भी नहीं जा सकती। बेशक, यह मेरी कमज़ोरी है लेकिन मैं इस क़दर मजबूर हूँ कि इसके अलावा किसी दूसरे मसले पर कतई गौर नहीं कर सकता।

मेरे आस-पास के सारे इलाकों में इस क़दर धुआँ छाने लगा था कि मैं अपने चेहरे पर एक खास किस्म की तह महसूस कर रहा था। उसमें एक अलगाव था और अपने को बिखेरने की एक तकलीफ़ थी। लेकिन मैं साफ़ जानता हूं कि अपने को समेटने के दर्द से खुद को मुक्त हर्गिज़ नहीं, खत्म जरूर कर सकता हूं। यहां मेरे लिए चुनाव का सवाल आ

जाता है और ज़ाहिर है, मैं पहले किस्म की तकलीफ़ को ही बरदाश्त करना ज्यादा पसंद करूंगा।

मेरे बिखराव के साथ ज़िन्दगी के सारे डर हैं। डर की मौजूदगी मेरी विवशता हो सकती है लेकिन अपने को एक कायर की तरह खत्म कर देने की कोशिश हर्गिज़ नहीं।

मैं शुरू से ही इस बात के लिए सतर्क रहा हूं कि अपने लिए खुरदुरा किस्म की किसी जमीन का इंतजाम कर सकूं। मुझे कुछ देर पहले जब बहुत जल्द घटने वाली इस घटना का अहसास होने लगा था, तब पहला फ़र्ज यही हो गया था कि अपनी ज़मीन की तलाश शुरू करूं।

जहां तक दीवार के कोने का सवाल है, ज़ाहिर है, यह मेरे लिए कोई किला हर्गिज़ नहीं साबित होगा। लेकिन ऐसी जगहों पर बेशक मैं खुद को ज़रूरत से ज्यादा निरापद और सुरक्षित महसूस कर सकता हूं।··· और तब यह लगना स्वाभाविक हो जाता है कि मेरे ऊपर हमले की संभावना उतनी तेज़ कतई नहीं है, जिसका कि अंदेशा देर से था।

मेरा वह साथी, जो कि एक लम्बे अरसे से मुझे अपना दोस्त समझना आ रहा था कमरे के उस कोने में खड़ा हो गया था, जो कि मुझसे सबसे ज्यादा दूर था। उसके होंठ ज़रूरत से ज्यादा भारी थे और आंखें छोटी थीं।···और गहरे नीले रंग के ट्राउज़र और भूरे कोटे में उस सफेद धुएं के बीच वह एकाएक जासूसनुमा कुछ लगने लगा था। उसके चेहरे की खाल में तनाव आ गया था और तब वह निहायत डरावनी शक्ल में अपने को किसी खाई में छिपा देने की कोशिश में कोई अनजान सी जगह तलाश रहा था।

वे लोग बहुत तेज़ी के साथ अन्दर घुस आए थे और उस सफेद धुएं के बीच पूरी ताकत के साथ दौड़ते हुए बिल्कुल अन्दर घुस पाने की कोशिश कर रहे थे। दूसरे कमरे का कोई आदमी बहुत तेज़ी के साथ चीख पड़ा था और तब एकाएक पूरे माहौल में एक अजीब किस्म की सनसनी फैलने लगी थी।

अन्दर से अच्छी तरह बन्द होने के बावजूद मेरा दरवाज़ा एक भयावह आवाज़ के साथ एकदम खुल गया था और तब धुएं का जमाव कमरे में और भी तेज़ होने लगा था।

इस वक्त मेरा कोई दूसरा साथी यहां होता तो बेशक वह दीवारों को मजबूती के साथ पकड़ने की कोशिश करता और आखिर में तब एकाएक हारकर संज़ीदा नज़र आने लगता। बेशक उसकी हालत तब ज़रूरत से ज्यादा दयनीय बन जाती लेकिन इतनी हिम्मत मुझमें बच नहीं रहती कि उसकी कुछ भी मदद कर सकूं।

धुएं के बीच मेरे पिता का चेहरा धीरे-धीरे बहुत साफ हो गया था। आखिर में मुझे इस क़दर ताज्जुब होने लगा था, गोया यहां कोई धुआं हो ही नहीं। ऐसा लगना मेरी मजबूरी है वर्ना कभी बहुत जल्द यह हो जाएगा कि मैं एकदम टुकड़ों में बंटने लगूंगा।

मेरे पिता के चेहरे की शिकनें आखिर में उभरने सी लगी थीं और वे बहुत व्यस्त होकर कोई सुरक्षित सी जगह तलाश रहे थे। उन्हें इस तरह डरते हुए देखना मुझे एक लम्बे अरसे बाद बहुत अच्छा लग रहा था और तब मैं इस तरह बुत सा खड़ा था, गोया फिलवक्त कुछ भी मदद नहीं कर सकता। उन्हें बेशक मेरी मदद की ज़रूरत थी और वे चढ़ते हुए बुखार के मरीज़ की तरह बराबर कांपने लगे थे।

मेरा ख्याल है, इस वक्त वे अपने जिस्म में एक तेज़ सा दर्द महसूस कर रहे होंगे और आखिर में देर तक 'बोल्ड' रहने के बाद घुटनों के बीच दोनों हथेलियां और चेहरा छिपा कर अपने को खो देने का एक झूठा नाटक करेंगे। मैं जानता हूं, इस झूठ से वे वाकिफ हैं लेकिन इसे भोगने में उन्हें जिस तरह का मज़ा आता है, वह एक खास किस्म की उपलब्धि है। ···और यह कतई नामुमकिन है कि इस उपलब्धि से वे अपने को अंततः वंचित ही रखें।

मैं जानता हूं, कुछ ही देर में यह सफेद धुआं जमकर एकदम ठोस और दीवारनुमा हो जाएगा। तब आंखों की जलन और भी तेज़ हो जाएगी और चेहरे पर ठहरती हुई तह का अहसास और भी भयानक लगने लगेगा। यह स्थिति एक अनिवार्य परिवर्तन है और परिवर्तन से भी ज्यादा एकाएक फिसल जाने का अहसास।

बेशक मैं अब लगातार एक विशेष मुद्रा में डरता जा रहा था। लेकिन इसके बावजूद मेरे पांव नीचे की खुरदुरी सी ज़मीन पर मज़बूती के साथ थे और मैं बराबर इस कोशिश में लगा रहा कि ज़मीन को और भी खुरदुरी, और भी तेज़ कर सकूं। यह लगभग मेरे जीने के लिए एक बेहद ज़रूरी शर्त है। इसमें बहुत सारी मजबूरियां और तकलीफ़ हैं लेकिन अपनी विवशता कहीं इससे ज्यादा।

मुझे उन दिनों की बात साफ़ याद आ गई, जब कलकत्ते की सड़कें बिल्कुल सुर्ख और गीली हो गई थीं। उनमें कुछ ही दिनों में ज़िबह किए गए लोगों के इतनी मौजूदगी थी कि किसी के लिए भी यह एक हैरानी ही साबित होगी। ····लेकिन उस वक्त मैं कतई स्थिर और अपने को देर तक परख कर देख पाने की स्थिति में था। उन दिनों मैं अपने पिता के नज़दीक नहीं था या वे मेरे नज़दीक नहीं थे वर्ना कोई भयानक सी घटना ज़रूर घट जाती।

एक दिन रात के वक्त बिल्कुल अकेले में मैं घर से निकल पड़ा था और देर तक गलियों और सड़कों में घूमने लगा था। काफी देर तक मैं अकेला था लेकिन बाद में गश्त लगाने वाला एक भयावह सा आदमी एकदम सामने आ गया था। उसकी आंखें सुर्ख थीं और चेहरे की खाल ज़रूरत से ज्यादा कसी हुई थी। अंधेरे में ऐसी आकृति बेशक किसी के भी लिए एक खास विषय हो जाया करती है। मैं इन्कार नहीं करूंगा, मेरे लिये भी थी लेकिन मैंने अपने को डरने से बचा लिया था।

...मैं जानता हूं, ऐसी हालत में मुझे एक मूर्ख समझा जा रहा था लेकिन इस विषय पर मैं कतई निर्विकार रहा और आखिर में एक बेहद टेढ़ी-मेढ़ी गली के अन्दर घुस कर बहुत तेजी के साथ सामने की तरफ दौड़ने लगा। मैं अपने घर की तरफ ज़रूर जा सकता था लेकिन दूसरी तरफ भागना ही मुझे ज्यादा अच्छा और रुचिकर लगा।

उस वक्त गली की दोनों तरफ की दीवारें गोया एकाएक सपाट हो गई थीं और उसके बीच से होकर असंख्य सड़कें बन गई थीं। ऐसा अक्सर हो जाता होगा लेकिन इस वक्त के होने में बेशक एक खास फ़र्क है। मेरी पिता की मौजूदगी से यह फ़र्क और भी फ़ासले का बन जाता और तब मुमकिन है, मुझे कोई दूसरा ही रास्ता चुन लेना पड़ता।

इस तरह की स्थिति में ऐसा महसूस हो जाता है, गोया मेरे पास एक शहर हो। औरों के पास भी होगा लेकिन मेरे शहर में और इस शहर में एक जटिल सा अलगाव है। इसके साथ मैं खुद भी एक अलग मुद्रा में जुड़ा हुआ हूं और अपने को कतई अलग नहीं कर सकता।

उस वक्त देर तक दौड़ते रहने के बाद मैं पाने लगा था, गोया ज़िबह किए गए लोगों की लाशों में मेरे पिता भी शरीक हो गए हैं। वे दुबक कर बैठ गए थे और इस कोशिश में थे कि अपने को बहुत सतर्कता के साथ छिपा सकें। वे सतर्क थे भी लेकिन उनकी यह अस्वाभाविकता एक

खासी बेवकूफ़ी लग रही थी। ठीक कुछ देर पहले की मेरी बेवकूफ़ी की तरह। ···लेकिन उनकी मजबूरी को मैं नहीं नकार सकता। मैं जानता हूं, वे कितने कमज़ोर और हल्के किस्म के हैं। यह सिर्फ अभी की बात नहीं, मेरा ख्याल है, मेरे पैदा होने के या खुद उन्हीं के पैदा होने के बाद से ही उनकी यह आदत है। शुरू में बेशक यह आदत ही थी लेकिन अब लाचारी बन गई।

मैं अच्छी तरह याद कर पा रहा हूं, जब मैं छोटा था मां के हाथ मुझे अक्सर मार खानी पड़ती थी। एक-आध बार मैं ज़रूर कोई गलती कर जाता था लेकिन ज्यादातर मुझे अपनी शराफत के बावजूद हार कर लौटना पड़ता था।

मेरे पिता अधिक रात हो जाने पर बहुत सतर्क कदमों से अन्दर आते और तब कोई मामूली सी बात, जिसे कि वह कतई अनसुनी कर सकते थे, को लेकर मां से एकदम झगड़ पड़ते। मैं ऐसे मौकों पर करवट बदल कर दूसरी तरफ लेट जाता था और चौकन्ना होकर प्रतीक्षा करता था कि मां किस तरह पीटी जा रही हैं। कभी-कभी मुझे इस पर बड़ा मजा आता और तब मैं एकाएक खुश होकर पलकों का थोड़ा सा हिस्सा खोलकर तुरंत बन्द कर लेता। उस रात मेरे मां या पिता कुछ नहीं खाते और बहुत जल्द जाकर अलग-अलग बिस्तरों में लेट जाते। कुछ देर बाद मैं उठकर मां के पास चला जाता था और तब रात भर के लिए उनकी सिसकियां मेरे लिए बिल्कुल साफ और पारदर्शी हो जाती थीं। मां के प्रति मेरी कुछ भी सहानुभूति रही हो, ऐसी बात नहीं, लेकिन उनके पास सोये बिना रहना मेरे लिए लगातार एक तकलीफ को बरदाश्त करने के बराबर था।

···आखिर में मेरा साथी जोरों से चीख पड़ा था और तब मैंने पाया था

कि वह बुरी तरह घायल है। उसके चेहरे की कुछ नसें कई जगहों से फट गई थीं और आँखों के नीचे के हिस्सों में खून जमकर काले पड़ गए थे। उसके जिस्म में बेशक मुझसे ज्यादा ताकत थी लेकिन हमले की चोटों से वह बहुत जल्द मुरझा गया था।

...यह मुरझाना उसका एक जबरदस्त नाटक था और वह इस कोशिश में लगा था कि हमलावरों के बीच से कोई रास्ता निकालकर छत की तरफ भाग सके। उसे उम्मीद थी, वहां पहले ही से उसके कुछ दोस्त मौजूद होंगे और उनकी मदद से वह अपना अगला रास्ता बहुत सहजता से तलाश लेगा।

लेकिन इस वक्त वह दीवारों के कोने में कोई खोह या उस तरह का कुछ ढूंढ़ निकालने में इतना व्यस्त हो गया था कि अपने ऊपर पड़ रही चोटों पर गौर करने की कुछ फुर्सत उसे नहीं मिल पा रही थी ।

उसके कंधे छिल गये थे और कमीज, बनियाइन और कोट एकदम फट जाने के कारण वहां के हिस्सों से झांकते लाल-लाल मांस बिल्कुल साफ हो गए थे। वह अपने कंधों को देर तक देखता रहा और तब बुरी तरह घबराकर उटपटांग गालियां फेंकने लगा। गालियां देते वक्त उसका गुस्सा डर से कहीं अधिक तेज और भयावह हो गया था और लग रहा था गोया इसी क्षण कोई भयानक सा विस्फोट हो जाएगा।

उसने अपनी हथेलियां सिर के नजदीक उठा ली थीं और फिर से एक नई शुरूआत के साथ चीखने लगा था। चूंकि एक लम्बे अरसे से मैं उसे जानता हूं, इसलिए उसकी चीख मेरे लिए एक निहायत मामूली बात थी। उसकी आवाज के तीखेपन से बेशक मुझे घबराना नहीं चाहिए था लेकिन मैं इन्कार नहीं करूंगा कि उस वक्त मुझमें जरूरत से ज्यादा घबराहट थी।

खून से पुता उसका चेहरा एकदम भयावह और विध्वंसी लग रहा था और ऐसी हालत में कुछ भी घट जाना निहायत मामूली बात साबित होती। मुझे लग रहा था, अपनी आदत के मुताबिक अब वह एकदम क्षिप्त हो जाएगा और तब अपनी कुछ भी परवाह किए बिना अपने को किसी भयानक सी घटना का नियामक साबित कर देगा।···लेकिन वह बिल्कुल स्थिर होते रहने की मुद्रा में खड़ा था और इसके बीच हमलावरों के बीच से रास्ता निकाल सकने की कोई नई तरकीब सोच रहा था।

वे लोग ढेर सारे थे। बहुत। उनके कपड़े खाकी और पांवों के जूते कुछ लोगों के बादामी और बाकी लोगों के काले थे। अपनी आंखों के चारों तरफ उन सबों ने चूना या उस तरह की दूसरी चीज की गाढ़ी लेई पोत ली थी। यह उनके बचाव का एक खास और अच्छा तरीका था। वे धुएं के बीच देर तक देख सकते थे और इस क्रिया में उन्हें किसी भी तरह की कोई तकलीफ नहीं बरदाश्त करनी पड़ रही थी।

मेरा साथी देर तक लगातार चोटों को बरदाश्त करने के बाद अब अपने को एक विशेष स्थिति में पाने लगा था। यानी ऐसी स्थिति में अपने को कतई महसूस नहीं किया जा सकता। स्वाभाविक रूप में उसका शरीर कड़ा होने लगा था और अपनी आदत के अनुसार वह नए नाटक की तैयारी करने में जुट गया था। इसकी पिछली सारी तरकीबें बिल्कुल नाकामयाब हो गई थीं और अब वह अपना नया रास्ता बनाने में बुरी तरह व्यस्त हो गया था।

मेरे बगल के कमरे का साथी बुरी तरह घायल था उसके शरीर के जोड़ों में चोटें थीं और इसलिए चाहते हुए भी किसी ओर भागना उसके लिए असम्भव हो गया था। मैं समझ गया था कि अब वह आंखों के ऊपर

कुहनी डालकर लेट जाना चाहेगा। और तब एकाएक उसकी सांस फूलने सी लगेगी। सांस फूलने से मुमकिन है, वह अपने को रोक भी ले लेकिन इसके बावजूद वह अपने को चिन्दियों में बंटने से नहीं रोक सकता।

.....लेकिन मैं या मेरे सभी पीटे गए साथी बेशक शरीफ हैं। अपने बारे में कभी-कभी हम कोई दूसरी बात भी सोच लेते हैं मगर दूसरों की राय में हम बेशक शरीफ हैं।

मेरा ख्याल है, वे सारे लोग भी शरीफ ही हैं जो हमलावरों की टोली में शामिल हैं। लेकिन हम पर हमला करना उनके जीने की मजबूरी है। वैसे इतना जरूर है कि आक्रमण करते समय वे कुछ रियायत कर सकते थे लेकिन जाहिर है, बेरहमी से ही वे ज्यादा फायदेमन्द साबित हुए।

वैसे अब मैं इस तथ्य से कतई नावाकिफ नहीं हूं कि इधर या पहले जो लोग जिबह किए गए हैं, वे शरीफ थे। भविष्य में भी जिबह किए जाने वाले लोग शरीफ ही होंगे, इस पर दो रायें नहीं होंगी।

मेरे पिता कभी-कभी जब आवेश में आ जाते, यहां की जमीन को देर तक गालियां सुनाते रहते। गाली देते वक्त उनका चेहरा तमतमाया सा रहता और उनकी आवाज एकदम भर्राने लगती। मुझे डर होता है कि कहीं बहुत ज्यादा उत्तेजित होकर वे कोई अजीब सी घटना न पैदा कर दें।...लेकिन मैं वाकिफ हूं कि बेहद कमजोर और डरपोक किस्म के हैं। कभी-कभी उनकी कायरता इतनी हास्यास्पद बन जाती कि गुस्से के बजाय मुझे उन पर दया आने लगती।

मैं जानता हूं, अपने पिता पर मैं कभी दया नहीं कर सकता। यह मेरी एक असामर्थ्य हो सकती है लेकिन कमजोरी कतई नहीं। ऐसा नहीं कि मैं कमजोर हूं ही नहीं लेकिन अपने पिता के प्रसंग पर मैं सायास पूरी

ताकत के साथ सतर्क हो जाता हूं श्रौर तब मैं इस स्थिति पर पहुंच जाता कि उन पर न्याय कर सकूं।

उनके कंधे का वह हिस्सा जो की जरूरत से ज्यादा सुर्ख श्रौर भयावह है, श्रब मुझे एक जरूरी परिवर्तन लगा। वह लाल जगह ऐसी लगती है, गोया श्रभी-श्रभी वे घायल होकर लौटे हों श्रौर घायल होने से पहले देर तक वे लड़ाई में शरीक रहे हों।

...लेकिन उन पर एकाएक यह प्रसंग सोचना बेशक ज्यादती साबित होगी। वे क्रूर हैं, होंगे लेकिन मुझे इस पर कोई हक नहीं है कि किसी पर लगातार ज्यादती बरतता रहूं। पिछले दिनों जब कुछ दिनों के लिए मैं उनके करीब था, मेरा व्यवहार बिलकुल जटिल हो गया था। वे परेशान हो गए थे श्रौर तब एक दिन रात में मेरे सिरहाने खड़े होकर देर तक प्रार्थना करने लगे थे।

उनके श्राने से पहले मैं लगातार करवट बदलता रहा लेकिन जब वे एकदम करीब श्रा गए मैं श्रौंधा लेटकर देर तक सांस रोके रहा। यह खुराफात थी श्रौर कहना जरूरी होगा कि गैर मुनासिब तौर पर इसमें मुझे बराबर श्रानन्द मिलता रहा।

वे शायद मेरे बालों को भी छूना चाहते थे लेकिन हथेली को कुछ ही श्रागे बढ़ाकर उन्होंने एकदम पीछे हटा लिया था। मेरा ख्याल है, वे एकाएक डर गये थे श्रौर तब इस तरह सकपकाने के श्रलावा कोई दूसरा चारा नहीं रह गया था।

मुझे जोरों से हंसी श्रा गई थी लेकिन उन्हें ज्यादा श्रपमानित करना श्रब मुझे मुनासिब नहीं लगा था। वे बहुत सधे कदमों से मेरे कमरे से निकल गए थे तब श्रपने कमरे में जाकर खिड़की के सामने खड़े हो गए थे। नींद

इण्डिया/२७

न आने पर अक्सर वे खुली हुई खिड़की के सामने खड़े हो जाते हैं और तब उनकी आंखें बिल्कुल खाली लगने लगतीं।

... मेरा साथी अब फिर डरा हुआ और एक जटिल मन:स्थिति में पहुंच गया था। ऐसे मौकों पर अपने को संतुलित रखना बेशक बेहद जरूरी होता है लेकिन उतनी ताकत शायद ही किसी में हो पाती है। लगातार घायल होते रहने के बाद अब वह बुरी तरह हांफने लगा था और तब उसके शरीर के खरोंचे हुए लाल-लाल मांस हमलावारों के खिलाफ बेहद आक्रामक लग रहे थे।

मैं अपनी गलती से कतई वाकिफ नहीं हूं। और मेरा ख्याल है, मेरा कोई भी साथी नहीं होगा। हम सिर्फ इतना जान पाये थे कि हम पर बिना किसी वजह के आक्रमण हो रहा है। मेरे पिता आवेश में आ जाने पर अक्सर यह कह देते हैं— इस मुल्क में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। कभी भी इस पर गौर करने की जरूरत नहीं महसूस हुई थी लेकिन अब मैं यह समझ पा रहा हूं कि यह कितनी सच्ची बात है। मेरा ख्याल है, हम अपने को बचा सकते हैं, कानून में ऐसा कुछ भी नहीं होगा लेकिन हम पर बिना वजह वे हमला कर सकते हैं, इस पर कानून की सम्मति है।

मै जानता हूं, खुद को मैं किसी भी हालत में बचा नहीं सकता। लेकिन जीने का एक अलग ही तकाजा होता है और इस बात को कतई इन्कार नहीं किया जा सकता कि हम या दूसरा कोई भी नितांत सामर्थ्यहीन है।

मैं जिस मुल्क में पैदा हुआ, वहां किस्म-किस्म के लोग हैं। पहले ये सब सिर्फ 'लोग' ही थे, अब व्यक्ति होते जा रहे हैं। यहां हजार तरह की

लड़ाइयां होती हैं, लोग विद्रोह करते हैं और आखिर में एक निहायत नपुंसक और क्लीव सा अंत आता है। वे लोग विद्रोह की बातें कर लेने के बाद बहुत आराम से दोपहर का या रात का खाना खाते हैं और सिग्रेट की कश खींचकर कहीं घूमने के लिए निकल जाते हैं।

दूसरों की निगाह में चूंकि अब तक मैं शरीफ ही साबित होता रहा हूं, इसलिए कुछ लोगों के लिए यह बेहद जरूरी हो गया कि मैं अच्छी तरह सजा भोग लूं। मेरे कमरे में सफेद धुएँ का जमाव और भी तेज, और भी खतरनाक हो उठा था और मैं महसूस कर रहा था कि ऐसी हालत में मुझे बहुत जल्द अब कोई दूसरा उपाय सोचना चाहिए।

मेरे सामने अपने साथी की स्थिति साफ थी। यह मेरी स्थिति की ओर भी एक विशेष सूचना थी। मैं अब अपनी पुरानी परिकल्पना के अनुसार छलांग लगा सकता था या यों ही चीख सकता था लेकिन बहुत जल्द कुछ भी कर लेना अपने लिए एकदम असंभव हो गया था। हालांकि मैं अब अच्छी तरह यह समझने लगा था कि अपने बचाव के लिए यह बेहद जरूरी है लेकिन मेरे लिए अपनी सीमाएं बिल्कुल साफ थीं।

मेरा ख्याल है, अगर इस वक्त मेरा साथी बहुत जल्द बेहोश हो जाता तो यह उसके हक़ में बहुत फायदेमंद रहता। लेकिन लगातार हारते रहने के बावजूद इतनी जल्द वह बेहोश हो नहीं सकता—अब यह मेरे सामने कतई साफ़ था। मुझे लगा था, अपनी आदत के मुताबिक यहां भी वह अपना ज़िद्दी स्वभाव दोहरा रहा है और आखिर तक दोहराता रहेगा। जब से उसे मैं जानता हूँ, वह ज़रूरत से ज्यादा ज़िद्दी है। कभी-कभी उसकी यह आदत निहायत फ़ालतू और मूर्खतापूर्ण लगने लगती। लेकिन मुझे मालूम है, अपने ऊपर उसका कुछ भी हक अब नहीं रहा। इस बात पर उस पर मुझे एकाएक दया आने लगी थी लेकिन मैं अपनी सीमा से आगे बढ़ता, उस वक्त यह कतई नामुमकिन था।

पहली बार जब से उसकी मुझसे मुलाकात हुई थी, वह मुझे अपना दोस्त समझने लगा था और अपने दोस्तों के बीच अलग-अलग तरीकों में इसकी चर्चा करता रहा। कभी जिस दिन वह बहुत खुश रहता, मुझे अपनी जिन्दगी के सारे किस्से बता डालता और तब आखिर में एक खासे बेवकूफ की तरह देर तक ज़ोरों से हँसता रहता।

नाराज रहने पर अक्सर वह अपने को कोई मसीहा समझता और तब एक दम मुझ पर बिगड़ कर देर तक गालियां सुनाता रहता। मैं जानता हूं, मुझे गालियां देना उसकी मजबूरी है। लगातार गाली देने के बाद वह मेरे पास बिना कुछ भी कहे खिसक सकता है और तब बाहर जाकर किसी दूसरे आदमी को एकदम अपना दोस्त समझ सकता है।

लेकिन कुछ ही देर में वह बिल्कुल निर्विकार और मासूम बच्चे की तरह दिखाई पड़ता। तब वह देर तक के लिए खामोश हो जाता और अपनी डायरी पढ़ने लगता। एक ही पन्ने को वह कई बार पढ़ जाता और तब उसके बाद अचानक उदास लगने लगता। उदासी में उसकी आंखें मुझे बहुत करुण और निष्पाप लगती हैं और तब एकाएक वह मेरे नजदीक आकर बहुत घनिष्ट हो उठता है।

लगातार चोटों के कारण, मेरा ख्याल है, उसके शरीर की बहुत सारी नसें टूट चुकी थीं। ज़ाहिर है, जिस्म के वे हिस्से सुर्ख होकर सूज उठेंगे और तब वह बेहोश होने तक कतराता रहेगा। मैं नहीं जानता कि उसके कंधों की हड्डियाँ टूटी हैं या नहीं लेकिन मुझे कोई शक नहीं है कि वे कई जगह से चटख चुकी हैं।

इस तरह घायल होने के बावजूद उसने अपना हौसला कहीं से भी घटने नहीं दिया था और बराबर इस कोशिश में था कि यहां से अपने को गायब कर सके। आखिर में वह बहुत खौफ़नाक हो उठा था और पूरी ताकत लगा कर हमलावरों के बीच कूद पड़ा था। ज़ाहिर है, वे इस

बात के लिए कतई तैयार नहीं थे और तब एकाएक सकपकाकर डरने लगे थे। अब उन्हें इस बात की साफ़ उम्मीद हो गई थी कि वह अपनी पतलून की जेब में से कोई बन्द किया हुआ छुरा निकाल लेगा और तब किसी एक की गर्दन या पीठ पर बहुत तेज़ी के साथ भोंक कर अपने को खिसका लेगा।

लेकिन उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया था और पूरी ताकत के साथ छलांग लगाकर कुछ आगे बढ़ जाने के बाद तेजी के साथ भागने लगा था। हमलावरों का जत्था डर जाने के बाद आपस में फुसफुसाने लगा था और तब वे उसके पीछे भागने के बजाय दूसरी तरफ़ चले गए थे।

मुझे उम्मीद थी कि अब वे हारने के आक्रोश में मुझ पर हमला कर देंगे और तब तक मुझे घायल करते रहेंगे, जब तक कि मैं बेहोश नहीं हो जाता। लेकिन उन्हें मेरे कमरे से निकलते हुए देख कर एकाएक मुझे ताज्जुब होने लगा था और तब मैं अपनी ओर की दीवारों में कोई ऐसी खोह निकालने की कोशिश कर रहा था, जिसमें कि खुद को अच्छी तरह छिपा सकूं।

मैं समझ गया था कि आवेश में रहने के कारण वे मुझे देख नहीं पाए हैं। लेकिन महज़ इतना ही मेरी आश्वस्ति का कारण हो, ऐसी बात नहीं। मैं जानता था, कुछ देर बाद वे फिर इस कमरे की तलाशी लेंगे और तब मैं एकदम बंट जाऊंगा।

पूरी सतर्कता के साथ मैं ज़मीन पर लेट गया था और धीरे-धीरे पलंग के नीचे की तरफ़ खिसकने लगा था। बेशक अब मैं पहले से कहीं ज्यादा सुरक्षित था लेकिन यह इतनी सामयिक चीज़ थी कि सिर्फ इतने पर आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता।

अब सामने का सारा दृश्य मेरे सामने स्पष्ट था और मैं पाने लगा था कि मेरे कमरे की छत किसी भी वक्त टूट कर ठीक मेरे ऊपर गिर सकती है । सामने के छोटे से मैदान में यह एक खतरनाक क़िस्म की लड़ाई थी । मैं देख पा रहा था कि बराम्दे पर खून के लाल निशान इस कदर पक्के हो रहे हैं कि कल सुबह के अखबार के लिए एक बहुत बढ़िया मसाला मिल जाएगा ।

अखबार में छपने के साथ ही ये सारी घटनाएं ऐतिहासिक हो जाएंगी और शहर भर के लोग बहुत दिलचस्पी के साथ यहां के सारे निशान देख कर दिनों तक इसकी चर्चा करते रहेंगे । बेशक इस चर्चा में उन्हें एक खास किस्म का मज़ा आएगा और वे चाहेंगे कि यह चर्चा दिनों तक शहर की जिन्दगी को ताज़ा और दिलचस्प रखे ।

लेकिन पिछले सालों से इस तरह की घटनाएं इतनी पुरानी और परंपरागत हो गई हैं कि कायदे से किसी भी शहर के लिए यह कोई खास सवाल नहीं रह गया । मैं जानता हूं, इस घटना के खिलाफत में यहां के चौराहों पर बहुत सारी भीड़ इकट्ठी होगी और तब लोगों की ज़बान पर अलग-अलग किस्म के नारे चिपक जाएंगे । यह दरअस्ल एक ज़रूरी मसला है और इस बात को इन्कार करना मुश्किल होगा कि इस तरह की भूमिकाओं की ज़रूरत कुछ लोगों को हमेंशा ही रहती है ।

···सामने की झुरमुटों में कुछ लोग अपने को छिपाने के लिए कोई सुरक्षित सी खोह या उस तरह की कोई दूसरी चीज़ बहुत व्यग्रता के साथ तलाश रहे थे, जब कि उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि इस तरह के प्रयासों के पीछे कोई तर्क नहीं रहता और आखिर में अंततः उन्हें समझौता करना ही पड़ेगा । उन्हें अगर विजय की तलाश या ज़रूरत रहती तो मुझे हर्गिज़ इतना बुरा नहीं लगता लेकिन वे एक गिरे हुए तरीके से अपने को समर्पित करना चाहते थे ।

यह समर्पण एक तकाज़ा था और इसके पीछे ज़िन्दगी को भोगने का एक प्रबल आग्रह मौजूद था। वे चाहते थे कि ज़िन्दगी को ही अंतिम उद्देश्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाए और तब उसकी स्थितियों को एक अपेक्षित दिशा में पाने के लिए भरसक कोशिश की जाए।

ऐसा नहीं कि समझौता के प्रति शुरू से ही मैं एक खिलाफ़त अन्दाज़ अपने अंदर पा रहा हूं बल्कि ज्यादा सचाई इस बात में होगी कि ज़िन्दगी के प्रति प्रत्येक दिशा से मेरा एक अलग दृष्टिकोण है। अपने साथियों के साथ लम्बी यात्रा में निकलने के बाद यह महसूस होता है कि मेरा कोई भी दोस्त नहीं है। आंतरिक रूप में शुरू से ही मैं एक दोस्त की ज़रूरत महसूस करता रहा हूं लेकिन मुझे मालूम है कि यह सब कतई अर्थहीन है।...... वजह के तौर पर फ़िलवक्त सिर्फ ही इतना कहा जा सकता है कि मैं किसी का दोस्त नहीं बन सकता। यहां दरअस्ल समझौते से बढ़ कर व्यक्तिगत अहसास और समझ की बात है।... और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझमें वे बातें कतई नहीं हैं कि असलास के तौर पर किसी को ज्यादा दिनों तक बहुत घनिष्ट रूप में पा सकूं।

...ऐसा ज़रूर होता है कि एकदम कोई आदमी बहुत नज़दीक का और बहुत अच्छा लग जाता है लेकिन मेरे लिए यह सब सामयिक बात हो गई। मैं जानता हूं, आज के इस आदमी के प्रति कल सुबह होते ही मैं कतई निर्विकार हो जाऊंगा और तब बहुत संभव है, मैं उसे पहचानने से भी इन्कार कर दूं।

उसके प्रति मेरे मन में घृणा मुमकिन है बहुत जल्दी एक उबाल के साथ बाहर निकल आए और तब अनपेक्षित रूप में कोई भद्दी सी घटना अचानक सामने आ जाए। ऐसी स्थितियां मेरी ज़िन्दगी में लगातार वर्षों से आ रही हैं और बहुत ज्यादा सतर्क रहने के बावजूद प्रत्येक बार मुझे हार कर ही लौटना पड़ रहा है। इसकी परिणति क्या होगी, यह

मेरे सामने साफ़ है। बहुत मुमकिन है, अब आगे किसी भी दिन से मैं खुद पर भी यकीन न कर पाऊं। जहां तक दूसरों से सम्बन्ध का सवाल है, बेशक उस पर मुझे तेज़ से तेज़ चाटें मिलती रहेंगी लेकिन अंततः अपनी ज़मीन पर रह जाना मेरी मज़बूरी है।

अपने को तलाशने के बाद मैंने पाया कि शुरू में ही ज़रूरत से ज्यादा बोल देना मेरी बहुत सारी कमजोरियों में से एक है। दरअस्ल यह एक बहाव की कमजोरी है और इसके बीच से अपने को अलग कर लेना अंततः मेरे लिए बहुत ज़रूरी साबित होगा। मैं जानता हूँ, अपने को देर तक खोलते रहने के बाद मैं अपने को बहुत थका हुआ महसूस करूंगा और तब अपनी कही हुई बातों पर मुझे डर महसूस होने लगेगा। ऐसी हालत में अपने को किसी काम लायक रखना कतई नामुमकिन हो जाता है और तब मेरी स्थिति बेहद दयनीय और उलझी हुई बनने लगती है।

लेकिन दर्द के तीखेपन का भोग मेरी ज़िन्दगी के लिए बेहद जरूरी मसला है और अब यह कतई नामुमकिन है कि मैं अपने को इससे एकदम अलग कर लूं।

मैंने अपनी पीठ दीवार से चिपका दी थी और पाने लगा था कि समूचा परिवेश बेहद ठंडा है। इतना ठंडा कि इसमें निश्चिन्त होकर जिया नहीं जा सकता। परिवेश के ठंडापन के साथ दीवार भी खुरदुरी और कहीं-कहीं एक-आध उभारों के बीच नुकीली लग रही थी। वैसे मैं जानता हूं, यह सब मेरे हारने की एक ज़बरदस्त भूमिका है।

चोट खाये हुए लोगों में से एक-आध लोग, जो ज्यादा होशियार और

शरीफ़ किस्म के हैं, मुर्दों की तरह सो गए थे और आंखों के ऊपर कुहनी रख कर अगली शुरूआत के लिए कोई नई सी भूमिका तलाश रहे थे।

मेरा ख्याल है, ठीक तभी हमलावरों का कोई और जत्था आ गया था और तब पूरी टोली को आक्रमण के लिए एक और ज़मीन मिल गई थी। इसका अनुमान मैंने यों लगाया था कि एकदम वे संख्या में बहुत सारे नज़र आने लगे थे और उनके हाथ के हथियार पहले से कहीं ज्यादा खतरनाक थे।

मेरे दरवाजे का गुलाबी पर्दा सामने के बरामदे में पड़ा हुआ था। मुझे इस बात पर ताज्जुब होने लगा था कि उसका रंग लाल होने के बावजूद उन लोगों ने इसे अपनी जेब के हवाले नहीं किया था और बराबर वे इसे रौंदकर आगे की तरफ़ बढ़ने लगे थे।

उस जगह, जहां कि दरवाजे से खिसक चुकने के बाद परदा गिरा हुआ था, एक भयावह सा खालीपन छा गया था। मैं देख रहा था, उससे सट कर खून की कुछ बूंदें हैं और उनके बीच परदे की यह मौजूदगी एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में काम आ सकती है।

भविष्य का कोई भी दिन इस पर्दे की तरह हो सकता है और तब संभव है, यहां की जमीन पर कोई भयानक सी क्रांति एकदम आ जाए। मेरे लिए यह एक लम्बी प्रतीक्षा जरूरी है लेकिन हज़ारों दर्दों के बावजूद इसमें एक क्रांतिकारी सुख है। मैं समझता हूं, यह सुख किसी आईने पर मैं किसी को बता नहीं सकता। एक तरह से अब मैं फिर से आश्वस्त हो गया था कि एक लम्बी दूरी के बावजूद मैं खुद ही एक नैकट्य हूं।

मैं अपने आस-पास जो शोर सुन रहा था, उसमें दरवाजों को तोड़ने के साथ साथियों की चीख़ का एक आतंकप्रद रूप था। मैं समझ रहा था, कुछ लोग दरवाजों की तरफ पीठ लगाकर खड़े हो गए होंगे और उनकी भरसक कोशिश यही होगी कि किसी भी कीमत पर दरवाजे की लकड़ियां अलग न हो पायें। दूसरी तरफ के बरामदे में हमलावरों में से कुछेक लोग इकट्ठा हो गए थे और अपने सामने वाले कमरे में घुसे हुए लोगों के विरुद्ध लगातार गालियां पेश कर रहे थे।

गाली देते वक्त उन सब की चेहरे की नसें तन कर भयावह हो रही थीं और तब आसानी से इस बात की उम्मीद की जा सकती थी कि अब किसी भी क्षण वे 'कोलैप्स' कर सकते हैं। कुछ ऐसा लग रहा था, गोया उनकी यह उत्तेजना एक लम्बे अरसे से संजोगी हुई हो और बराबर उनकी कोशिश यही रही कि वह किसी भी कीमत पर घटकर खत्म न हो जाएं।

उनके चेहरे जो कि बादामी थे एकदम सुर्ख हो गए थे और तब मेरे लिए यह उम्मीद करना एकदम जरूरी हो गया था कि स्थितियों का सामना करते हुए मैं कभी भी बिखर कर अलग हो सकता हूं। बेशक अपने को केन्द्रित रखने की क्रिया में मैं दृढ़प्रतिज्ञ था और तब बराबर इस कोशिश में लगा रहा कि अपनी घबराहट पर कुछ भी ध्यान न बटाऊं। यह एक तकलीफ की बात थी और बेशक इसमें अपने को सुरक्षित पाने की भरसक कोशिश थी।

मेरे लिए ज़िन्दगी को महसूस करने के कई पहलू हैं और मैं जानता हूं, कोई भी पहलू मेरा घनिष्ट नहीं है। कम से कम ऐसा आज तक कभी भी मैं महसूस नहीं कर पाया। यह मेरी कमज़ोरी भी हो सकती है लेकिन अपने प्रति मेरी यह आश्वस्ति बहुत पक्की है कि अकेलेपन को भोगने के बीच ही मैं ज़िन्दगी को पा सकता हूं।

पिछले कई दिनों से मेरा वह साथी मुझ पर नाराज़ था और बराबर इस कोशिश में लगा रहा कि मैं उसके सामने कहीं न कहीं ज़रूर ज़लील किया जाऊं और तब वह आकर मुझ पर अहसान जताए। मेरी कमज़ोरी का फायदा इससे पहले भी कई बार वह उठा चुका है और हर बार वह अपने को नितांत निरीह ही प्रमाणित करता रहा। कभी-कभी उसकी यह सफ़ाई बेहद हास्यास्पद हो उठती है और तब वह और भी ज्यादा गुस्से में आ जाता……

पिछली रात वह एकदम गुस्से में आ गया था और बिना किसी भूमिका के लगातार मुझे गालियां सुनाने लगा था। मैं जानता हूं कि ऐसी स्थितियों में अपने को निहायत निर्विकार कर लेने के अलावा मैं कुछ भी नहीं कर सकता। तब मैंने सुबह का अखबार उठा लिया था और पढ़ी हुई खबरों को दोबारा बिना किसी जरूरत के पढ़ने लगा था। दोबारा पढ़ते वक्त मुझे लगा था, गोया अभी तक इन खबरों के बारे में मैं कतई अनभिज्ञ हूं और मेरी यह अनभिज्ञता अब बहुत जल्द खतरनाक साबित होगी।

देर तक बोल चुकने के बाद वह मेरी मेज़ पर आकर बैठ गया था और वहां पर रखी किताबों को खोल कर उनमें से कुछ खोजने की कोशिश करता रहा। मैं जानता हूं, यह उसकी तकलीफ़ छिपाने की एक सहज कोशिश है।

हालांकि इस वक्त यहां या आस-पास के इलाकों में बारिश की कुछ भी उम्मीद नहीं थी लकिन मुझे लगा था अब बहुत जल्द यहां ठंडी हवा चलने वाली है और तब एकदम पानी बरसने लगेगा। पानी बरसने पर मुझे एक बच्चे की दूर तक जाती हुई नीली आंखें याद आ जाती हैं। पानी बरसने पर वह अपनी खिड़की पर आ जाता था और तब पानी की बूंदों को अपनी हथेली में महसूस कर एकाएक खुश हो उठता था।

यह उसकी अकेलेपन की खुशी है। वह चाहता था कि अपने को किसी तरह दीवार के उस पार की ज़िन्दगी में शामिल कर लें और तब अपने को नए सिरे से महसूस करें।

...बहुत तेज कदमों से हमलावरों में से कुछेक लोग मेरे कमरे में फिर से दाखिल हो गए थे। उन लोगों ने मेज़ पर रखी घड़ी को नीचे गिरा दिया था और पलंग के ऊपर पूरी ताकत के साथ लाठियां घसीटने लगे थे। मेरा ख्याल है, उन्हें इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि मैं पूरी सतर्कता के साथ पलंग के नीचे लेटा हुआ हूं। उन लोगों ने गुलदस्ते को कई टुकड़ों में तोड़ दिया था और पंखे के ऊपर दो-चार लाठियां मार कर वे पूरे यकीन के साथ बाहर निकल गए थे।

बाहर निकलते वक्त वे इस कदर खुश थे, गोया यह उनकी कोई खास उपलब्धि हो। देर तक उनके ठहाकों की आवाज बरामदे में गूंजती रही और आखिर में वे एकदम खामोश हो गए थे। मेरा ख्याल है उन्हें उनके साथियों में से किसी ने डांट दिया था और तब वे अपने कर्तव्य पर सचेत हो गए थे।

अधेड़ किस्म का एक हमलावर जिसके कि चेहरे का रंग एकदम सलेटी और जिस्म कुछ-कुछ बादामी था, दूर से ही बिल्कुल खूंखार और और फौरन कुछ करने की कोशिश में जुटा हुआ सा लग रहा था। अगर वह मेरी तरफ़ आ जाता तो मेरा ख्याल है, उनकी आंखों से अपने को बचा पाना मेरे लिए क़तई नामुमकिन साबित होता।

वह आदमी पूरी टोली का कप्तान रहा होगा और उसके ऊपर सारी जिम्मेदारी रही होगी। उसकी आंखें बेहद सुर्ख थीं और होंठ निहायत

भद्दे किस्म के थे। मैं समझता हूं, शुरू में वह इतना भद्दा और खूंखार नहीं रहा होगा लेकिन ऐसी परिस्थिति में आना उसकी एक मजबूरी है। धुएं की आकृति मेरे कमरे में फिर नए सिरे से फैलने लगी थी और मैं पाने लगा था कि मेरी ज़मीन एकदम उखड़ गई है। अब मैं एकदम बिखर गया हूं और कुछ ही देर में खत्म भी होने लगूंगा।

यह धुआं जब इस कमरे की चौहद्दी से एकाएक हट जाएगा, तब आस-पास का समूचा इलाका ऐतिहासिक महत्त्व का होकर अखबारों में दिनों तक छपता रहेगा। आखिर में होगा यही कि मैं और हम कुछ घटनाएं बनकर एक लम्बे अरसे तक अखबारों में चिपके रहेंगे।

दरअस्ल यह एक समाप्ति है। इसके बाद की शुरूआत बिल्कुल अलग होगी और तब उसमें जीने वाले लोग एकदम नए किस्म के होंगे। उनके हाथों में मुमकिन है नाखून के बजाय कुछ और हो जो कि भविष्य के दिनों के लिए निहायत ज़रूरी होगा।

दूर के कोने वाले फाटक से मैं जिस आदमी की निगाह में आ गया था, कद से वह जरूरत से ज्यादा लम्बा और बहुत तेज दौड़ने वाला था। उसके दांत कुछ सफेद जरूर थे लेकिन ज्यादातर काले थे। ओंठ खुले रहने पर जब उसके दांत लम्बे-लम्बे साफ दिखाई पड़ते, उस वक्त वह बेहद खतरनाक सा लगने लगता।

वह बहुत तेजी के साथ मेरे कमरे तक आ गया था। शुरू में वह अकेला जरूर था लेकिन कुछ ही देर में उसे भागते हुए देखकर उसके बहुत सारे साथी, जो कि आस-पास थे, इकट्ठा हो गए थे। मुझे याद नहीं कि उसकी गाली की भाषा क्या थी लेकिन जाहिर है, वह बहुत मामूली या सहज किस्म की हरगिज न थी।

मैं महसूस कर रहा था, मेरे साथी की जगह खाली है और बेशक अब

तक मुझे उस जगह पर होना चाहिए था। मेरी परिणति मेरे साथी की परिणति से कई गुना ज्यादा भयावह जरूरी होगी, इसे मैं जानता था। और चूंकि मैं जानता था इसलिए इस बात के लिए अपने को तैयार भी पाने लगा था। क़िस्मत या उस तरह की किसी भी चीज़ पर यकीन मैं नहीं करता हूं। मेरा साथी इस बात पर एकबार मुझसे बुरी तरह नाराज़ हो गया था तब मैं पाने लगा था कि उसमें समझौता करने की ताकत बहुत तेज है।

मैं जानता हूं, उनके हमलों के बीच मेरी स्थिति कहीं नहीं है।....और कहीं नहीं होने के कारण मै एकदम बिखरा हुआ हूं। आखिर में होगा यही कि मैं खुद को बूढ़ा और किसी काम के लिए असमर्थ पाने लगूंगा। उन लोगों ने पलंग को खींच कर दीवार से एकदम अलग कर दिया था। पूरी ताकत लगा कर मैं उस वक्त चींख पड़ा था। उस चींख में आक्रोश विनती, जिहाद और अपने को तोड़ देने की कोशिश—सब कुछ थे। लेकिन मैं जानता हूं, सब से बढ़कर वह एक लड़ाई थी। अस्तित्व की लड़ाई। और ऐसी लड़ाई की समाप्ति कभी नहीं हुआ करती।

मैंने पूरी ताकत के साथ छलांग लगा दी थी और तब पाने लगा था कि एक तरफ होने के बजाय मैं कमरे के ठीक बीचोबीच हूं। यह मेरी पहली छलांग थी और आखिरी भी। मैं अब इस क़ाबिल नहीं रह गया था कि कोई दूसरी छलांग लगाऊं और सिर को घुटनों के बीच ठूंस दूं। मेरी गर्दन की हड्डियां एकदम तीखी हो गई थीं पूरा चेहरा बहुत जल्द सूजने लगा था।

गर्दन के अलावा मैंने महसूस किया, सिर के कई हिस्सों में सख्त घाव है। मुझमें होश था क्योंकि अपने को महसूस करने के लिए अपने अन्दर होश

की मौजूदगी बहुत जरूरी है। मेरी कमीज फटने लगी थी और ऊपर की तरफ कुछेक बटन चटखने लगे थे। कमीज कई जगहों से सुर्ख और गीली हो गई थी और लग रहा था गोया मैं एकदम बदल कर कुछ और लोगों के प्रति खतरनाक हो रहा हूं।

थोड़ी देर में मेरे सारे दर्द खत्म हो गए थे। यानी उस वक्त कुछ भी महसूस कर लेना मेरे लिए मुमकिन नहीं रह गया था। और मैं पाने लगा था कि मैं बेहद हल्का हूं। इतना हल्का कि अब उड़ने के लिए कोई दिक्कत नहीं रह गई।

.....दूर तक देखता हुआ वह बच्चा मुझे फिर याद आ गया था। उसकी आंखों में एक यातना थी। हथेली पर पड़ती हुई पानी की बूंदें अब उसके लिए गोया अपने को खत्म करने की एक असह्य सी अनुभूति बन गई थीं। उसकी आंखें नीली थी। और उनमें अपने को तोड़ देने की एक भरसक कोशिश बहुत तेज़ हो रही थी।

मैंने अपनी दोनों हथेलियां ऊपर उठा दी थीं और सिर को एक सुरक्षित जगह तक पहुंचाने की पूरी कोशिश करता रहा। वे लोग एक वृत्त के रूप में मेरे चारों ओर मौजूद थे और उनके हथियारों की चोटों से मेरे शरीर के अलावा घर की दीवारें भी बदशक्ल बनती जा रही थीं।

मैं अचानक एकबारगी तेज हो गया था और बरामदे तक आकर खंभे तक पहुंचकर हांफने लगा था। उनके ब्यूह को मै तोड़ पाऊंगा, इसकी उम्मीद उन्हें कतई न थी। महज वे ही नहीं, बहुत ज्यादा आस्थाशील होने के बावजूद इस मामले पर मैं कतई उम्मीद नहीं कर पा रहा था।

आखिर में मैं कुछ भी परवाह किए बिना सरपट भागने लगा था और तब पाने लगा था कि मेरी टांगें बेहद भारी हैं। कुछ दूर जाने के बाद मुझे

महसूस होने लगा था, गोया टांगों के मांस में चिपकी खून की नसें एकदम सूख गई हैं और मुझे चाहिए कि मैं बहुत जल्द कहीं लेट जाऊं।

हमलावारों का वह जत्था बहुत तेजी के साथ मेरे पीछे दौड़ने लगा था तब मैंने महसूस किया था कि मैं कितना कमजोर हूं। इसमें कहीं नपुंसकता है या नहीं इसे मैं नहीं जानता लेकिन मेरी सामर्थ्यहीनता एक खास सचाई थी।

मेरे सामने कुछ कांटेदार झाड़ियां थी। उनके ऊपर एकदम गिर पड़ने के बाद बहुत आराम महसूस होने लगा था। मैंने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं और तुरन्त औंधा होकर लेट गया था। मुझे अच्छी तरह मालूम था कि कलकत्ते में हुए दंगे की पुनरावृत्ति कुछ दूसरे रूप में यानी लगभग एकतरफा यहां होने लगी है और अब किसी भी समय मेरा और मेरे साथियों का जिबह खुले तौर पर हो सकता है। हम लोगों का खत्म हो जाना कानूनी तौर पर बहुत बुरा नहीं साबित होगा क्योंकि हमने कुछ भी नहीं किया था।

अपनी नपुंसकता को छिपाने के लिए कुछ लोग बलात्कार के झूठे किस्से गढ़ देते हैं और बहुत दिलचस्पी के साथ लोगों के बीच उसकी चर्चा करते रहते हैं। मेरा ख्याल है, हमलावारों के जत्थे के बारे में यह बात गलत नहीं साबित होगी। जिन लोगों के खिलाफ उनका जिहाद थे वे उनसे मजबूत रहे होंगे और उनकी मजबूती के विरुद्ध उगते आक्रोश का शिकार अन्ततः कुछ निरीह लोगों को होना पड़ा।

अब वे मेरे करीब आ गए थे और मेरे शरीर पर नीली धारियां पूरी गहराई के साथ चिपक रही थीं। बहुत मुमकिन है उन धारियों के नीचे का मांस सड़ जाए और तब कुछ दिनों बाद मैं एक निश्चित समाप्ति तक पहुंच जाऊं।

लगातार घायल होते रहने के कारण बेशक अब मुझे चीखना चाहिए था लेकिन एकदम मैं इतनी हिम्मत नहीं कर पाया था। कांटेदार झाड़ियां अब काफी नरम हो गई थीं और उन पर लेटते हुए मुझे कहीं कुछ भी तकलीफ नहीं हो रही थी।

.....मैं और मेरे दूसरे घायल साथी अब एक कतार में खड़े कर दिए गए थे और हम सब एक दूसरे को भयानक रूप से अजनबी लगने लगे थे। खून के लौंदों के बीच हम लोगों की स्थिति निश्चय ही बहुत सहज नहीं हो सकती थी। इस तथ्य को हम लोग समझ गए थे और तब महसूस होने लगा था, हमारी समार्थ्य किस कदर सीमित है।

मैं जानता हूँ सुबह तक ये खून के बिखरे हुए निशान समूचे शहर के लिए बहुत दिलचस्प हो जाएंगे और तब आयाचित सहानुभूति के बीच अपने लोगों को पाकर हम सब एकाएक मुर्दे शरीर बन जाएंगे। अभी तक जो कुछ हुआ, यह एक शुरूआत थी। हम लोगों का सफर ठीक यहीं से बहुत दूर तक के लिए शुरू होता है और आखिर तक पहुंचते-पहुंचते हमारे शरीर में हड्डियों की चुभन बहुत भयानक हो जाएगी।

....अब हम एक स्थिर बिन्दु तक पहुंचकर हांफने लगे थे। हमारे चारों ओर हमलावारों का जत्था बेहद ऐतिहासिक लग रहा था और सड़क के बीच से चलते हुए हम लोग पाने लगे थे कि खिड़कियों से झांकते हुए लोगों के लिए हम कितने अजीबोगरीब हो गए हैं। ...दरअस्ल यह सब हमारे अपमान के लिए एक आयाचित करुणा थी। हम सभी साथी अब एक दूसरे को दोस्त लगने लगे थे। हालांकि दूसरों के बारे में मेरा दृष्टि-कोण शुरू से ही अलगाव का रहा है। मैं जानता हूं, अभी कुछ दिनों तक वाकई ये सभी लोग मुझे अपने दोस्त लगेंगे। लेकिन एक खाली

जमीन पाते ही मैं बिल्कुल बदल जाऊंगा । घायल शरीर में सभी एक दूसरे को सहभोक्ता होने के कारण दोस्त लगते हैं लेकिन घाव सूखते ही सब एक दूसरे से एक अनपेक्षित दूरी तक पहुंच जाते हैं ।

मेरे शरीर की कई नसें टूट चुकी थीं । अब बुखार के कारण मेरी आंखें एकदम .खूनी और जलती हुई लग रही थीं और मैं पाने लगा था कि अपने लोगों में सब से ज्यादा कमज़ोर मैं ही हूं । मैं अगर सड़क के बीच इसी वक्त खून उछाल देता, तो मुमकिन है कि उसकी भयंकर सुर्खी से मुझे कुछ राहत मिल पाती ।

यह एक जाड़े का दिन था और मौसम भयानक रूप में ठंडा था । कुछ पानी अगर तेज हवा के साथ बरस जाता तो ठंडक जरूर बढ़ जाती लेकिन तब मैं अपने को तकलीफ बरदाश्त करने के काबिल पाने लगता । तब मेरी अंगुलियों के नाखून एकदम तेज़ हो जाते और मैं अपने को इस क़दर हारा हुआ नहीं महसूस करता ।

---- यह एक लम्बा सफर था । बहुत लम्बा ।

मैं गाड़ी पर चढ़ा दिया गया था और घुटनों के बीच सिर छिपाकर अपने को एक एक नई स्थिति में पाने लगा था । मैं जानता हूं, कल सुबह तक मैं अपने को इन साथियों के साथ लम्बी सलाखों के अहाते में पा सकूंगा और तब से व्यग्र होकर मुक्ति की प्रतीक्षा करनी होगी ।

मैं जानता हूं, यह एक भटके हुए प्रेतों का नगर है । यात्रा में मैं अपने को बेहद खाली महसूस करने लगा था और पाने लगा था कि घुटनों के बीच ज़िन्दगी छिपाने के बावजूद मैं एकदम बिखर गया हूं ।

क़सबे का आदमी

"कहिए महाशय आपके कष्ट का निबारन कैसे करूं ? परन्तु आप तो जुबक हैं और जुबकों के कन्धों पर ही सम्पूर्न बिस्व रखा हुआ है। परन्तु जुबकों की दशा देखकर मन में बहुत दुःख होता है। जब मेरा जौबन था, तब देह में उमंग थी। आज भी जब आयु इतनी अधिक हो गई है, उमंग समाप्त नहीं हो गई···परन्तु आज के जुबक हैं क्या ? पैदा

होते ही इनके सिर के बाल सफेद होते हैं, नेत्र कोटरों में धंसे होते हैं ···।''

बिद्यारतन को अक्सर ही ऐसा लगने लगता है जैसे कोई जबरदस्ती उसके करीब खड़ा होकर उसकी गरदन निर्ममता के साथ मरोड़ रहा हो। उसकी अंगुलियों का नुकीलापन कभी-कभी मौका पाकर गरदन के ऊपर हिस्से तक उठ आता है और एक सहज प्रक्रिया में नसों को टुकड़ों में बांट देता है। पहले इससे उसे दहशत होती थी, अब एक अनिवार्य कष्ट भर होता है।

बिद्यारतन ने दीवारों को पाट देना चाहा था। कभी उसने बहुत कोशिश की थी, मगर अब सब कुछ कर लेने के बाद खामोश होकर बैठ गया—इन्हें वह पाट सके, इतनी ताकत अब नहीं। गोकुल इतमीनान से बैठ गया था और काफी देर तक बैठ चुकने के बाद जब एकाएक ऊब महसूस करने लगा, तब अलग-अलग कोणों से विद्यारतन के खुरदरे चेहरे को घूरने लगा था। जी में आया था, अब बोल ही दे—अब छुट्टी करो पंडिज्जी, लिख दो कोई नुस्खा। लिखना भी क्या ? जल्दी से बांध दो पुड़िया।

बिद्यारतन एकाएक अपने खुरदरे चेहरे पर हथेली घुमाने लगा था। खालीपन महसूस होने पर ऐसा वह अकसर ही करता है। उसका इस बार का अहसास इतना तीखा था, जैसे उसकी पीठ की खाल उधेड़ी जा रही हो। अब उसे महसूस हुआ कि वाक़ई वह बूढ़ा हो गया है और एक लम्बे अरसे तक अपने को बूढ़ा न महसूस कर वह खुद ही को धोखा देता रहा। "हां, तो मैं कह यह रहा था कि आपका रोग वैसे है तो साधारन, परन्तु असाधारन होने में देर ही कितनी लगती है ? शरीर के लिए औषधि ही

सब कुछ नहीं है, नित्य गंगाजी में स्नान कीजिए और प्रातःकाल मुक्त वायु सेवन कीजिए। किन्तु नियमित रूप में।"

गोकुल अपने कुरते की जेब में हाथ डालकर जिस चीज़ की तलाश कर रहा था, वह उसे मिल नहीं सकती, इतना वह जानता है। मगर ख़ुद को बचाने के लिए अभिनय एक अच्छा साधन है। तब वह एकाएक उठ खड़ा हुआ था और चूरनों की बोतलों पर एक घिसी हुई अठन्नी फेंककर तेजी से दरवाजे से निकल आया था।

बिद्यारतन की आंखों में एक खास क़िस्म की जलन महसूस हो रही थी। मगर अब वह साफ़ समझ गया था कि दूसरों के इलाज करते रहने के बावजूद वह खुद को बचा नहीं सकता। उसके शरीर का ऊपर का हिस्सा जैसे भुनकर सुर्ख़ हो गया था और अब किसी भी वक्त उसके चटख जाने की सम्भावना थी। मगर इतने तीखे दर्द के बावजूद वह खामोश था और किसी चरम परिणत की प्रतीक्षा में समय के टुकड़ों को जोड़ता जा रहा था।

कोई और होता, तो सोचता, धस्साली ज़िन्दगी भी क्या है! मगर उसका ख़याल ऐसा नहीं है। पहले ज़रूर ऐसा था कि किसकी मजाल थी; जो उसकी ओर आंखें उठाकर देख लेता! मगर बदलाव का दुःख अब उसे नहीं होता। होता भी है, तो परवाह नहीं करता। हां; पहले दिल में एक टीस-सी उठती थी, मन कांपता था।

"अरे भई, कोई हो यहां''''आं ऽ ऽ ऽ?" कोई क्या होगा···होगा भी तो सुनकर अनसुनी कर जायेगा। मगर सब कुछ समझ लेने के बावजूद बिद्यारतन को .गुस्सा नहीं आता। .गुस्सा आयेगा भी क्या उसके लिए मर्द

होना चाहिए, चाहिए डेढ़ मन का कलेजा। अपने ऊपर अब उसे कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी और वह संजीदा सा लग रहा था।

बिद्यारतन फिर से कमरे का निरीक्षण कर रहा था। अब क्या होगा! दीवार के ऊपर से पलस्तर हट गई थी। ईंटें लाल लाल दांतों की तरह झांक रही हैं। अगले पांच सालों में यह मकान एक खंडहर बन जायेगा। बस। उसके बाद सब कुछ ख़त्म।

घिसी हुई अठन्नी में जैसे गोकुल का चेहरा चिपक गया था और उस चेहरे में दीवारों जैसी दरारें उभर आई थीं। मन हुआ था, कि सिक्के को उठाकर दे मारे उसके चेहरे पर। मगर उसकी बाज़ू तब एकाएक थरथराने के बाद मरे हुए जानवर के शरीर की तरह स्थिर हो गई थी। फिर भी गोकुल आ गया था। अब एक आध घण्टे में कोई दूसरा ग्राहक आयेगा, इतना भी यक़ीन बिद्यारतन कर नहीं पाता। उसे आश्चर्य हो रहा था, रोगी को ग्राहक सोचने में उसका मन अभ्यस्त कैसे हो गया!

कभी कभी जी में आता है, अब बाप-दादे का पेशा छोड़ ही दें। अब होगा भी क्या इस पेशे से! उसके शरीर में जैसे एक सांप रेंग रहा था और इस कारण अहसास में एक झुरझुरी सी फैल गई थी। क़स्बे के लोग अब अंग्रेज बन रहे हैं! बुखार तक के लिए शहरी दवा लाते हैं! हाय, क्या हो गया देश को!

बिद्यारतन ने किवाड़ की सांकलें चढ़ा लीं। फिर अठन्नी को आहिस्ता से जेब में रखकर सहमते क़दमों से अन्दर आ खड़ा हुआ। धूप तीखी है।

"मालती कहां है? और शारदा?" बिद्यारतन की कंपकंपी छूट रही थी। सवाल भी कैसा बेबुनियाद कर दिया उसने!

मालती की अम्मा झल्ला उठती है। बिद्यारतन को ख्याल आया, वह शारदा की भाभी भी तो है। वह एकाएक सहमकर इस तरह सामने से खिसकने लगा था, जैसे उसके ऊपर एक शिकारी कुत्ता झपट्टा मारकर मांस नोच लेना चाहता हो। वह तेज़ कदमों से बगीचे की तरफ चला गया था।

उस खाली बगीचे में उसे लगा, जैसे उसके ऊपर आक्रमण करने के लिए कोई पालथी मारे बैठा है मगर वह अपने को बचा नहीं सकता। उस खालीपन में भी वह दुपकने लगता है और अन्त में घुटनों के बीच चेहरा छिपाकर आंखें बन्द कर लेता है।

पूजा-पाठ चलाने पर भी रोजगार इससे कम नहीं होगा, उसे महसूस हुआ, जैसे उसे जबरदस्ती क़ब्र में लिटाकर ऊपर से भारी मिट्टी का बोझ रखा जा रहा हो। मगर बिद्यारतन समझता है, यह एक झूठा अहसास भर है। इसके पीछे दुःख है, दर्द है, मगर मौत नहीं है। मौत की एक बहुत लम्बी प्रतीक्षा जरूर है।

मालती कहां होगी इस समय···बिद्यारतन सब कुछ समझता है। दिल में एक हूक-सी महसूस करता है। इस कारण गोकुल पर पहले ग़ुस्सा आता था। अब गोकुल ही आंखें लाल कर लेता है···यूं ही ग़ुस्से के लिए ग़ुस्सा करना। वह साफ समझता है, गोकुल को रोग नहीं है। वह तो बस यूं ही आता है। यूं ही मतलब किसी दूसरे मतलब से। मगर गोकुल कहता कुछ नहीं। कहे भी क्या? मन मारकर राख का ढेर बन गया अब। उसे इस शरीर का झुरझुरीवाला वह पुराना अहसास जैसे अन्दर की अंतड़ियों को दबोचने लगा था। और रीढ़ के हड्डी के समानान्तर एक दूसरा दर्द मांस के लोथड़ों को कुरेदता हुआ ऊपर,

गरदन की तरफ बढ़ने लगा था। मगर बिद्यारतन निर्विकार था। कुछ करने के लिए मर्द होना पड़ता है।

उसने बगीचे को पीछे छोड़ दिया था। कुछ आगे आते ही परभुदास भिला था—इस इलाके का दरोगा।

"परनाम, पंडिज्जी!"

बिद्यारतन को आश्चर्य हो रहा था। परभुदास हंसना भी जानता है क्या? वह कुछ अलगाव के साथ पीछे की ओर हटकर खड़ा हो गया था। आखों में फिर से उसी तरह की जलन महसूस हो रही थी और चेहरे की पेशियां बिना किसी पूर्व संकेत के लगातार कांप कर एक कमज़ोरी-सी पैदा कर रही थीं।

"वो ऽ जरा एक बात कहनी थी···"

बिद्यारतन चौकन्ना होकर खड़ा हो गया था।

"सारदा है न आपकी बहन सुना है, लड़का खोज रहे हैं। आप तो मुझे जानते हैं, पंडिज्जी, आपको मैं बताऊं भी क्या·····।"

बिद्यारतन को बहुत दिनों बाद फिर से महसूस हुआ कि अब भी वह मर्द है। डेढ़ मन का नहीं, तो मन भर का कलेजा अब भी बाक़ी है। वह थर्राने लगा था। धृष्ट कहीं का! रण्डियों के कोठे में नशे में धुत्त पड़े रहने वाला···उसकी इतनी मजाल···! "होश में हो परभुदास?"

"आप तो सारदा को जानते हैं, पंडिज्जी! मैं खराब हूं और जहां मैं जाता हूं उसमें और आपके घर में फर्क ही क्या है? आप तो सारदा को भी जानते हैं, पंडिज्जी।" परभुदास ने बढ़कर बिद्यारतन के पांव छू लिए थे और तुरन्त ही साइकिल पर सवार होकर अदृश्य हो गया था।

बिद्यारतन वहीं ज़मीन पर बैठ गया था। रीढ़ की हड्डियों के समानान्तर गरदन तक बढ़ने वाला वह दर्द अब अचानक और भी तेज़ हो गया था और शरीर में दौड़ते रक्त में एक अजीब-सी मुर्दनगी छा गई थी। वहीं
कुल दिखाई दे गया था। इस बार वह भला लगा।

मगर गोकुल इधर नहीं आया। उसने जरूर देखा होगा, मगर नज़दीक आने की जरूरत नहीं महसूस की। आता भी तो क्या होता, बिद्यारतन के गालों पर तमाचे के निशान और भी पक्के हो जाते। बिद्यारतन अपने पांवों के उन हिस्सों को देख रहा था, जहां कुछ पहले परभुदास की अंगुलियां थीं। लगा, अब एकाएक जैसे वह भी नापाक हो गया। हाय, यह क्या हो गया!

वह घुटनों के बीच सिर झुकाये छाया में अपनी ज़िन्दगी छिपाने लगा था। अब क्या होगा···इस घर में अब लौट कर रहे भी कैसे? मगर बिद्यारतन खुदकशी तो कर सकता है। इतनी आज़ादी उसे है। जय मां गंगे! सब तेरी कृपा है···! सब तेरी ही माया है! तूने कभी जस दिया था, अब तू ही कलंक से रच्छा कर !

मृत्यु का चेहरा अब उसे क़तई साफ दिखाई दे गया था और वह उसकी प्रतीक्षा में धीरे-धीरे घाट की तरफ बढ़ने लगा था। उसकी पिंडलियों में एक खास क़िस्म की जकड़न-सी छा गई थी। और इस कारण उसे चल पाने में कठिनाई महसूस नहीं हो रही थी।

समाप्ति से पहले उसने चारों तरफ भयभीत-सा देखा। कहीं जैसे अब कोई नहीं रहा। और अब आत्महत्या के बाद भी कोई नहीं मिलेगा। उसके पीठ का दर्द अब और भी तेज़ हो गया था और रीढ़ की हड्डियों

में टूटने का-सा बोध हो रहा था। मगर यही ज़िन्दगी है ···इतना दुख भी क्यों ?

उसने कुरते की दाहिनी जेब में हाथ डाला। गोकुल वाली घिसी हुई अठन्नी ज्यों की त्यों पड़ी हुई है। उसमें तो गोकुल का दरारों वाला चेहरा भी चिपका हुआ है। मगर गोकुल इससे वाक़िफ़ नहीं होगा। सिर्फ वह ही जानता है इसे ...और कोई नहीं।

"जय मां गंगे !" बिद्यारतन ने डुबकी लगाई और थर्राते हुए घर की ओर भागने लगा।

अपने कमरे के अन्दर घुसकर उसने दरवाजों की सांकलें चढ़ा दीं और गीले कपड़े बिना उतारे जमीन पर निढाल लेटकर फूट-फूटकर रोने लगा। रीढ़ के हड्डी के सामानान्तर गरदन के पिछले हिस्से तक बढ़ने वाला वह पुराना दर्द फिर से अचानक बहुत तेज हो गया था। अब उसमें झुरझुरीपन का नुकीलापन भी फैलने लगा था।

आख़िर

बग़ल के फ़्लैट में कल ठीक इसी वक्त एक बिखरता हुआ शोरगुल छा गया था। उस बिखराव में तरह-तरह की आवाजें पैदा हो रही थीं और उनमें आपस में भारी-भरकम टकराव हो रहा था। अलग-अलग गति से बनती आवाज़ों से समूचा परिवेश जैसे उखड़कर अचानक चिपक गया था।

नहीं। आज बगल के फ़्लैट में इस तरह की एक भी आवाज़ पैदा नहीं

हो रही है। जिस तरह का सन्नाटा वहां व्याप्त हो गया है, उसमें एक गहराते हुए आतंक का आभास अनायास ही होने लगता है। अब कितना अजीब लगता है कि महज़ चौबीस घण्टे के अन्तर के कारण कितना बड़ा परिवर्त्तन आ सकता है। कल उसके घर में अचानक इतने सारे लोग आ गए थे कि सुई की नोक भर जगह भी खाली नहीं थी। मगर सन्नाटे के कारण अब ऐसा महसूस होता है, जैसे उस घर में क्या आसपास के बीस-पचीस मील में भी कोई न रहता हो।

जिसकी वजह से इतना भारी परिवर्त्तन अचानक ही आ पड़ा, वह उसका दोस्त था। दोस्त कहने की अपेक्षा, परिचित कहना ही ज़्यादा उचित होगा। उन दोनों ही का एक दूसरे के प्रति खयाल था कि वे अच्छे आदमी हैं और अब, उसकी मौत के बाद, लग रहा है कि वह वाक़ई अच्छा आदमी था। मगर इतनी जल्दी वह मर क्यों गया, यह एक रहस्य-जैसा लग रहा है। मुमकिन है, उसकी हत्या कर दी गई हो ? या यह भी हो सकता है कि ज़िन्दगी को फिज़ूल और निरर्थक समझने के बाद ख़ुद उसी ने अपने को मार डाला हो ? और अब तो आत्महत्या के बहुत सारे रास्ते उपलब्ध हैं। ऐसे भी रास्ते अब खुल गए कि जिससे मरने वाले को कहीं ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होती। न उसके आस-पास के लोगों को ही पता चल सकता है। सम्भव है, उसने उनमें से कोई रास्ता अपना लिया था ! मगर बारीकी से देखा जाए, तो पता चलेगा कि उसकी हत्या कर दी गई थी। यानी उसको एक ऐसे परिवेश में ज़बरदस्ती ठूंस दिया गया था, जहां पहुंच कर हर आदमी अपने को क़ब्र के लिए ही उचित पाता है…

अभी सामने की सड़क भरी हुई होगी। यह शाम का वक्त जो है, उस पर भी आज इतवार है। पर ये लोग ज़रा-सा मौक़ा पाते ही इस तरह

झुण्ड-के-झुण्ड क्यों निकल पड़ते हैं? आखिर ये सब आदमी हैं न? मगर इन्हें इस तरह निरुद्देश्य भटकते देखकर जानवरों का भ्रम हो जाता है। जैसे कुत्तों के झुण्ड कई टुकड़ियों में बंटकर, एक दूसरे का मुकाबला कर रहे हों।

इन लोगों में खोजने पर कुछ उनके परिचित, दोस्त और रिश्तेदार मिल जायेंगे। मगर उन्हें देखने पर मन में जो प्रतिक्रिया छाएगी, उसे सोचते हुए, उनकी ओर न देखना ही ज़्यादा अच्छा है सम्भव है, उन्हें देखने के बाद उसके मन में ऐसा उबाल आ जाए कि जबान से गाली उंड़ेले बिना वह अपने को संतुलित न रख पाए।

ज़बान से वह गाली तो नहीं उंड़ेलता, मगर इस तरह झुंझलाता है, जैसे इन लोगों के पाते ही बेकाबू होकर झपट पड़ेगा। पर दूसरे ही क्षण उसके सारे अंग-प्रत्यंग इस तरह शिथिल होने लगते हैं, जैसे उसमें जान ही न हो।

अब वह सोफे पर उठकर खिड़की के सामने आ जाता है और बहुत ग़ौर से रास्ते से गुजरते हुए लोगों का मुआयना करता रहता है। नहीं, उसने गलत सोचा था। इस भीड़ में उसका परिचित एक भी व्यक्ति नहीं है। इन लोगों के चेहरे की शिकनों को देखने से यही अहसास होता है जैसे सड़क से कोई मुर्दों का जुलूस जा रहा हो। ये लोग शायद जन्म से ही मुर्दे हैं क्योंकि इनके शरीर को देखकर ऐसा नहीं लगता कि कभी ये जीवित भी थे।

पर वह सोचने लगता है कि ख़ुद उनके जीने का क्या अर्थ है। चारों तरफ जिस तरह कोहरा छाया हुआ है, उसमें पलने के कारण मुमकिन है

उसका अस्तित्व भी पिघल कर कोहरा बन गया हो। अगर वह पैदा ही न हुआ होता तो भी कहीं से कोई फर्क आता, ऐसा नहीं लगता। उसके आने से पहले और आने के बाद की क्रियाओं के बीच मौलिक रूप में कोई अन्तर आता नहीं है।

....पर उसके पैदा होने के बाद, अब तो एक लम्बा अरसा बीत गया। उसे अब लगने लगा कि वाक़ई अभी तक वह जीवित ही था। मगर अब और ज़्यादा दिनों तक जीवित रहना शायद मुमकिन नहीं हो सकेगा।

यही बात अगर वह सामने, हमेशा व्यस्त रहने वाले चौराहे पर चिल्ला कर कहे तो, लोग ज़रूर उस पर फटे हुए जूतों और पत्थरों के टुकड़े बरसाने लगें। मुमकिन है, उन फेंकने वालों में से कोई एक दबे पांव आकर उसके पीछे खड़ा हो जाए और मौक़ा पाते ही उसका गला पकड़ कर, निर्ममता के साथ दबा भी दे?

सामने की सड़क से गुजरती हुई बसें और टैक्सियां जैसे एकाएक रुकने लगती हैं और रुक जाने के बाद, जैसे वे जमीन के अन्दर धंसने की प्रतिक्षा में वक्त का एक लम्बा हिस्सा गुज़ार देती हैं। अगर ये सवारियां इसी वक्त जमीन के अन्दर धंस जाएं, तो उनमें बैठे और खड़े मुर्दों का क्या होगा? तब वे ज़रूर जमीन ही में दफ़न हुए कहे जायेंगे। थोड़े दिनों के बाद उनके शरीर का मांस सड़कर जमीन में मिल जायेगा और तब केवल ढांचा-ही-ढांचा रह जायेगा। एक अरसे बाद हड्डियां भी जमीन में मिल जाएंगी और तब पता भी न चलेगा कि यहां की मिट्टी में कभी कुछ लोग दफनाये गए थे।

सामने की हवा उसे एक शीशे की तरह महसूस होती हैं। एक ऐसा शीशा, जो आदमक़द हो और जिसमें बहुत आसानी से वह अपना चेहरा देख सकता है।

उसे अचानक महसूस होने लगा था, कि जैसे उसके अन्दर की सारी क्रियाएं एकाएक तेज़ हो गई हों और उस तेज़ी को वह क़तई बरदाश्त न कर पा रहा हो। सम्भव है, ऐसी स्थिति में, कुछ देर बाद उसे जीने की अपेक्षा मौत को स्वीकार करना ही अधिक रुचिकर लगे। मगर इसके बावजूद अभी कुछ दिनों तक और वह जीवित रहना चाहता है।

धीरे-धीरे शाम हो गई थी और उसे अपने उस गुजरे हुए दोस्त या परिचित व्यक्ति की याद बरबस आ रही थी। लग रहा था, जैसे कहीं दूर से चलने के कारण थक कर चूर हो जाने के बाद, वह यहां आ गया हो और उसे अपने सीने से जबरदस्ती दबोचना चाह रहा हो।

अगर उसका वश चलता, तो वह ज़रूर उसकी चुनौती स्वीकार करता और महसूस करता कि वाक़ई इस तरह निरुद्देश्य जीना कोई क़ीमत नहीं रखता। फिर भी जीवन को स्वीकार करने में उसे ज़रा भी संकोच न होता, मगर आज जैसा परिवेश एकाएक कांटों की तरह पैदा न हो जाता।

पर वह इसलिए भी परेशान होता रहा कि इस तरह मौत को भी स्वीकार क्यों किया जाए ? सम्भव है, थोड़े दिन-बाद इधर-उधर चारों ओर एक व्यापक परिवर्तन आ जाए और इस तरह की ऊब क़तई न महसूस हो।

सामने का अन्धकार अब तक और भी गाढ़ा हो चुका था और उसमें भरी अस्पष्टताएं धीरे-धीरे आकृति में ढलने लगी थीं। मगर उनके आकार ले चुकने के बाद भी वह समझने में असमर्थ रहा कि यह जीवन या मृत्यु — क्या है। मुमकिन है, ये आकृतियां इन दोनों चीजों में से कुछ भी नहीं और कोई तीसरा तत्व ही उनमें मौजूद हो ?

मगर नहीं। इस तरह समझौते के परिवेश में वह जी नहीं सकता और साथ ही मौत को भी सहज रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। अब थोड़ी देर बाद शायद, उसे वह अर्थ वाक़ई पता हो जाए, जिसके लिए अब तक वह बेहद परेशान था।

अभी वह अपने सामने कुछ भी नहीं देख पा रहा था। उसके सामने जैसे एकाएक अंधेरे का कोई विशाल समुद्र आ गया था, जिसकी लहरों के साथ एक गहराती हुई दहशत थी।

वह खिड़की के पास से हटकर फिर से सोफे पर बैठ गया था और आंखों को बन्द किये अगली घड़ियों की प्रतिक्षा कर रहा था। दरअसल उसका विश्वास था कि अगली ही घड़ियों में ही उसे अपने सवाल का वास्तविक उत्तर मिल जाएगा।

बगल का फ़्लैट इस वक्त अंधेरे में डूबा हुआ होगा उसमें रहने वाले लोग पता नहीं अचानक इस तरह खामोश क्यों हो गए है। उठता है और बगलवाली खिड़की से झांक कर देखने की चेष्टा करता है कि वहां इस समय हो क्या रहा है।

मगर नहीं। वह कुछ नहीं देख पा रहा है। उसे फिर से ऐसा महसूस होने लगा है, उसका पुराना दोस्त कहीं से चलकर यहां आ गया है और उसके साथ चल देने के लिए बहुत आग्रह कर रहा है।

क्रॉस

रात भर में अलग-अलग आकारों की बहुत सारी लकड़ियां तराश ली थीं उसने लेकिन वह बिलकुल थका नहीं था। बाहर बरसता हुआ मूसलाधार पानी शुरू में उसे एक अजीब सी सिहरन दे रहा था पर कुछ समय बाद एकाएक वह क़तई निर्विकार हो गया था। यह एक बढ़ती हुई मजबूरी है कि चाहते हुए भी वह कई मसलों पर ध्यान नहीं दे पाता। यहां तक कि अपने ऊपर भी नहीं।

क्रॉस/६५

सुबह उसने पाया कि उसकी हथेलियां लाल हैं। यह पहला मौक़ा था, जब हथेलियां उसे डरावनी लगीं। बेहद बदसूरत भी। एक-आध जगह खून की लकीरें उसे अजीब सी लगीं। पर वह क़तई घबराया नहीं।

वह उठकर सामने से अपना कोट उतारने लगा। कुहनियों की जगहें खाली थीं। दो विभिन्न आकारों के छेद। उसने चाहा कि चलने से पहले उन फटी हुई जगहों को सतर्कता से छिपा ले पर अपने को वह बहुत कमज़ोर महसूस हुआ। कोट के अलग-अलग हिस्सों को वह देर तक देख चुकने के बाद एकाएक पहन कर हांफने लगा।

पतलून की तरफ नज़र जाते ही वह चौंका। सिर्फ दो ही दिन में कितना 'डर्टी' हो चुका। वह बुदबुदाने लगा। तथ्य क्या था, इससे खुद वह भी वाक़िफ़ नहीं होगा। ऐसा दिमाग़ में आया कि पतलून बदल लेना चाहिए। पर ग़ुस्से से उसने कुछ भी नहीं किया। सिवाय इसके कि चलने की पहले वह गर्दन और गले के खुले हुए हिस्सों में मफलर लपेट चुका था।

वह पैदल ही चलने लगा। सीधे रास्ते से आने के उसे वक़्त और मेहनत से बचत होती पर घूमकर आना ही उसे अच्छा लगा। गेट के पास बहुत सारी कारें थीं। स्कूटर और साइकिलें भी।

पहुंचने वाले लोगों में से वह पहला व आख़िरी, कुछ भी नहीं था। महज भीड़ का एक आदमी होने से वह ख़ुद को बहुत मामूली लगा। ग़ैर ज़रूरत का भी। यहां उसकी मौजूदगी के बिना कुछ भी कमी रह जाती, दिमाग़ में बहुत दबाव डालने के बावजूद ऐसा वह सोच नहीं पाया।

उसने देखा कि भीड़ में से अलग होकर चिम्पी अचानक उसके नज़दीक

आ गया है। उसकी कमीज़ ग्रे कलर की थी और ट्राउज़र काला था। पहली बार चिम्पी उसे अच्छा लगा। आकर्षक भी।

'हलो, पापा···हाऊ आर यू ?'

'फाइन, ····फाइन।' पर उसे अपनी ही आवाज़ एकाएक निरर्थक लगी थी। और चिम्पी एकाएक बुरा लगने लगा था।

उसने देखा, चिम्पी बहुत धीरे-धीरे मुस्कुरा रहा है। इस वक्त अपनी आदत के अनुसार वह खुलकर हंस सकता था। पर ऐसा न होने के कारण उसे ताज्जुब होने लगा।

'बहुत' 'लकी लेडी' थी वह। क्रिसमस के दिन मरी है। आई आल सो विश टु डाई ऑन दिस वेरी डे।' चिम्पी फिर मुस्कुराने लगा था।

वह बुदबुदाया, 'ऑल नानसेंस। स्लैप मांगता है क्या ? उम्र में मैं तुम्हारे पापा से बड़ा ही होऊंगा। गेट एवै SSS।' आखिरी वाक्य पर उसने इतना ज़ोर डाला की चिम्पी अप्रतिभ-सा रह गया। उसके बाद वह और भी क़रीब खिसक आया था। और भी तेजी से मुस्कुरा रहा था।

रात ख़त्म होते ही उसे खबर मिली थी। मिस आग्नेस इज़ नो मोर। पहले वह चौंक उठा था। कांप रहा था।····ह्वाट नॉनसेंस ? पर बाद में वह बैठ गया था। गोया दिनों तक खड़ा रहने के बाद उसे बैठने का एक अप्रत्याशित मौका मिल सका था। उसे लगा था—शी इज़ नो मोर। यही 'ट्रुथ' है। साथ में 'ट्रुथ' यह भी है कि वह एक 'गुड लेडी' थी। ऐसे लोगों के मौत से सबको सदमा पहुंचता है।

सुबह उसने पाया कि उसकी हथेलियां लाल हैं। यह पहला मौक़ा था, जब हथेलियां उसे डरावनी लगीं। बेहद बदसूरत भी। एक-आध जगह खून की लकीरें उसे अजीब सी लगीं। पर वह क़तई घबराया नहीं।

वह उठकर सामने से अपना कोट उतारने लगा। कुहनियों की जगहें खाली थीं। दो विभिन्न आकारों के छेद। उसने चाहा कि चलने से पहले उन फटी हुई जगहों को सतर्कता से छिपा लें पर अपने को वह बहुत कमज़ोर महसूस हुआ। कोट के अलग-अलग हिस्सों को वह देर तक देख चुकने के बाद एकाएक पहन कर हांफने लगा।

पतलून की तरफ नज़र जाते ही वह चौंका। सिर्फ दो ही दिन में कितना 'डर्टी' हो चुका। वह बुदबुदाने लगा। तथ्य क्या था, इससे खुद वह भी वाक़िफ नहीं होगा। ऐसा दिमाग़ में आया कि पतलून बदल लेना चाहिए। पर ग़ुस्से से उसने कुछ भी नहीं किया। सिवाय इसके कि चलने की पहले वह गर्दन और गले के खुले हुए हिस्सों में मफलर लपेट चुका था।

वह पैदल ही चलने लगा। सीधे रास्ते से आने के उसे वक्त और मेहनत से बचत होती पर घूमकर आना ही उसे अच्छा लगा। गेट के पास बहुत सारी कारें थीं। स्कूटर और साइकिलें भी।

पहुंचने वाले लोगों में से वह पहला व आखिरी, कुछ भी नहीं था। महज भीड़ का एक आदमी होने से वह ख़ुद को बहुत मामूली लगा। ग़ैर ज़रूरत का भी। यहां उसकी मौजूदगी के बिना कुछ भी कमी रह जाती, दिमाग़ में बहुत दबाव डालने के बावजूद ऐसा वह सोच नहीं पाया।

उसने देखा कि भीड़ में से अलग होकर चिम्पी अचानक उसके नज़दीक

आ गया है। उसकी कमीज ग्रे कलर की थी और ट्राउजर काला था। पहली बार चिम्पी उसे अच्छा लगा। आकर्षक भी।

'हलो, पापा···हाऊ आर यू ?'

'फाइन, ···फाइन।' पर उसे अपनी ही आवाज एकाएक निरर्थक लगी थी। और चिम्पी एकाएक बुरा लगने लगा था।

उसने देखा, चिम्पी बहुत धीरे-धीरे मुस्कुरा रहा है। इस वक्त अपनी आदत के अनुसार वह खुलकर हंस सकता था। पर ऐसा न होने के कारण उसे ताज्जुब होने लगा।

'बहुत' 'लकी लेडी' थी वह। क्रिसमस के दिन मरी है। आई आल सो विश टु डाई ऑन दिस वेरी डे।' चिम्पी फिर मुस्कुराने लगा था।

वह बुदबुदाया, 'ऑल नानसेंस। स्लैप मांगता है क्या ? उम्र में मैं तुम्हारे पापा से बड़ा ही होऊंगा। गेट एवै SSS।' आखिरी वाक्य पर उसने इतना ज़ोर डाला की चिम्पी अप्रतिभ-सा रह गया। उसके बाद वह और भी क़रीब खिसक आया था। और भी तेजी से मुस्कुरा रहा था।

रात ख़त्म होते ही उसे खबर मिली थी। मिस आग्नेस इज़ नो मोर। पहले वह चौंक उठा था। कांप रहा था। ···ह्वाट नॉनसेंस ? पर बाद में वह बैठ गया था। गोया दिनों तक खड़ा रहने के बाद उसे बैठने का एक अप्रत्याशित मौका मिल सका था। उसे लगा था—शी इज़ नो मोर। यही 'ट्रूथ' है। साथ में 'ट्रूथ' यह भी है कि वह एक 'गुड लेडी' थी। ऐसे लोगों के मौत से सबको सदमा पहुंचता है।

वह एकाएक दीवार के पास पहुंच गया था। ईसा की तस्वीर उसे जीवंत लगी थी। प्रार्थना के लिए एक लम्बा समय गुजारते वक्त वह अपने को बहुत असहाय लग रहा था। पहले अहसास की तरह ग़ैर जरूरत का भी। तब उसकी आंखें एकाएक गीली हो आई थीं।

चिम्पी फिर हँसा, 'यू आर वेरी डिप्रेस्ड टुडे !'

वह चुप रहा।

'पापा, तुम नाराज़ हो ?' चिम्पी की आवाज उसे बच्चों की तरह लगी।

वह मुस्कुराया, 'नहीं। पर अब तुम खामोश हो जाओ।' आखिरी वाक्य कहते वक्त उसका चेहरा फिर संजीदा हो उठा था। बेहद सफेद भी।

पिछली रात लगातार मेहनत के बावजूद इस वक्त उसे थकान क्यों नहीं महसूस हो रही है, वह क़तई समझ नहीं पाया। तराशी हुई लकड़ियां उसे याद आईं। एक साथ इतनी सारी लकड़ियां उसने कभी तराशी हों, ऐसा बहुत सोचने के बावजूद उसे याद नहीं आया। इनसे तीन बड़ी मेजें बन जायेंगी। शायद एक कुर्सी भी बन जाये।

कॉफ़िन में कंधा देने के लिए चिम्पी बढ़ गया।

इतने सारे लोग ? उसे ताज्जुब हुआ।

'मफल्ड ड्रम' की आवाज़ अच्छी लगी। इस लगाव में एक 'करुण' था। 'ब्रैंड मार्च' में ठहरते और चलते हुए कदमों में उसे ठहराव कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण लगा। अचानक वह फिर से उदास हुआ। इस वक्त सभी कितने मायूस हैं।

उसने 'फादर' की आंखों को बहुत ग़ौर से देखा। गले में लटकता क्रॉस गोया आंख की पुतलियों की तरह एकाएक चमकने लगा था। इस

वक्त वह करीब पहुँचकर क्रॉस का मुआयना कर सकता था। पर ऐसा सोचना उसे अर्थहीन लगा।

फ़ादर बदल गये हैं? यह एक चोट है। उसे महसूस हुआ, अब कुछ भी होना असम्भव नहीं है।

वह फिर घूरती हुई आंखों से अपने कोट का निरीक्षण करने लगा। उसे खाली जगहों से निकली हुई कुहनियां बहुत दयनीय लगीं। पर यह उसकी लाचारी थी और लाचारी से मजबूती की सीमा कहीं अधिक थी।

दस साल गुज़र गये हैं। वह क्रिसमस तो नहीं था पर दिन यही थे। ठीक ऐसा ही ठिठुरन पैदा करने वाला जाड़ा। उसका भी 'क्रिमेशन' यहीं हुआ था। उस गुल मुहर और अमलतास के बीच।

तब 'सिम्पैथी' जाहिर करने वालों के बीच वह अपने को असहाय और कमज़ोर पाने लगा था। जी में आया था, एकाएक ज़ोर से चीख पड़े और इस मज़मे को टुकड़ों में बांट दे। पर उसने ऐसा नहीं किया था। सिर्फ कांपता रहा कुछ देर तक।

……घर खाली हो गया था। वह कोई बच्चा छोड़ जाती तो अपने में उसे इतनी तक़लीफ़ नहीं महसूस होती। गोया उसके जीने के लिये महज़ एक एकान्त ही शेष बचा हो।

तब 'फादर' आकर उससे बातें करते थे। बहुत सारी बातें—देश-देश की बातें, ईसा की बातें, मेरी की बातें। और भी बहुत सारी बातें। फादर का बात करना उसे अजीब लगता था। वह एक अजीब विस्मय से उनका चेहरा देखता था।

लोगों के कदम उसे अजीब लगे। ये कैसे 'मार्च' करते हैं!....वन....टू....थ्री...बहुत सारे लोग।

'हल लोऽऽ' मार्गा अचानक उसके सामने आ गई थी। उसका प्रसंग दूसरा था, 'आजकल दिखाई नहीं पड़ते? चर्च भी नहीं जाते। फ़ादर पूछ रहे थे।'

'इधर थोड़ा बिजी था,' वह झूठ बोला, मेरा खयाल है, अगले 'वीक' से चर्च जा सकूंगा।'

'यू फ़ील अनइज़ी! तबीयत ठीक है न?' मार्गा को उसकी आंखें सफेद और निष्प्राण लगीं थीं। वह और भी क़रीब आई। पर हमेशा की तरह उसके सफेद बालों पर इस बार अंगुलियां नहीं फेरीं। वह खामोश हो गई थी। उसे भी खामोश रहना अच्छा लगा था।

उसे अजीब सी परेशानी होने लगी थी। जी में आया था कि उसे मार्गा न कहकर मार्गरेट कह दे। जाहिर है, नाराज हो जायेगी। और तब कस कर उसके गालों पर दो चांटे रसीद कर दे। ... वह उदास क्यों नहीं होती?

भीड़ और भी ठोस हो गई थी।

गोलाई में खड़े होकर कॉफ़िन को देखना उसे अजीब लगा। लगा, एकाएक वह बेवकूफ़ हो गया है।

खोदी हुई मिट्टी से कुछ दूर फ़ादर रहस्यमय लग रहे थे। निहायत अर्थ-पूर्ण भी! उसे आश्चर्य हुआ—फ़ादर के बारे में यह अहसास पहले कभी नहीं हुआ था।

इस क़ब्र के ऊपर कोई पेड़ नहीं है, उसने बहुत ध्यान से देखा।

कल तक यहां दो पेड़ लग जायेंगे। अमलतास और चन्दन उसे महसूस हुआ, यह उसकी जिम्मेदारी है।

मार्गा अब उदास लगी। चिम्पी भी।...और यह एकदम हो गया था।

वह हटा और चिम्पी के बगल में जा खड़ा हुआ, 'माई ब्वाय !'

उसने उत्तर नहीं दिया। देखा भी नहीं, हालांकि इतना वह बहुत आसानी से कर सकता था।

चिम्पी के कंधे पर हाथ रखते हुए उसे ऐसा महसूस हुआ कि यह शरीर निष्प्राण है। बेहद ठंडा भी। वह चौंका ...

...वह चौंका और कुछ दूर हटकर विपरीत दिशा में देखने लगा। पर इस बार ख़ुद को उसने रोक लिया था। वह बहुत आराम से रो सकता था, पर उसने ऐसा हर्गिज़ नहीं किया।

'फ़ादर ?

उसके बुदबुदाने का जवाब नहीं मिला। उसे आश्चर्य भी नहीं हुआ। यह पहला अवसर था, जब वह इतना संतुलित रह पाया था।

जी में आया, अब यहां से खिसक चले। गेट तक बहुत तेज़ रफ्तार से चला वह। और फिर एकाएक ठहर कर दूनी रफ़्तार से वापस आ गया। तब एकदम हांफने लगा था। अब उसे एक लम्बे अर्से बाद थकान भी महसूस होने लगी थी।

उस माहौल में जो सन्नाटा था, वह उसे भयंकर लगा। इतना भयङ्कर कि इसमें जिया नहीं जा सकता। चर्च की घण्टियों में भी कभी-कभी ठीक ऐसा सन्नाटा छा जाता है। वह कांपता है... ...

'और ?' उसके पीछे खड़ा रहने वाला साथी दबे लहज़े में बोला।

उसने उत्तर नहीं दिया। लगा, उत्तर में कुछ भी वह बहुत आसानी से कह सकता था। पर खामोशी उसे अधिक रुचिकर लगने लगी थी।

फ़ादर की आवाज़ उसे निहायत करुण लगी। 'बाईबिल' के ये शब्द नये नहीं हैं। पर इस बार इनके बीच कोई अर्थ ढूंढ़ने में वह क़तई असमर्थ रहा।

'फ़ादर...फ़ादर...' उसकी आवाज़ इतनी कमज़ोर थी कि ख़ुद उसे भी ताज़्जुब होने लगा था।

....कल तक यहां चन्दन और अमलतास की छाया होगी। संगमर्मर का क्रॉस क्या दे पायेगा, यह उसे नहीं मालूम। इस पर उसने ज़्यादा सोचा भी नहीं। ज़रूरत भी नहीं महसूस की।

फ़ादर के चेहरे पर से उसने नज़र हटा ली थी। और तब बहुत तेज़ चलकर सीधे घर आ गया था।

रात भर की तराशी हुई लकड़ियां उसे बहुत प्यारी लगीं। बहुत ज्यादा अर्थपूर्ण भी। जल्दी से कोट उतार कर वह उन पर अंगुलियां फेरने लगा। नहीं मेज नहीं। इनसे एक खूबसूरत 'कॉफ़िन बन जायेगा। बस—सिर्फ़ एक चीज़ अपने लिये। यह पहला होगा, आखिरी भी। यह......

वह अनजाने में दीवार के करीब चला गया था। और तब कुछ आगे बढ़ कर दीवार के साथ मत्था टेक कर ठहर गया था। ईसा की तस्वीर के ठीक नीचे उस गुजरी हुई औरत की तस्वीर थी। उसे पहली बार एक अजीब ढंग से महसूस हुआ, जैसे, वह औरत उसकी पत्नी नहीं थी। कभी नहीं थी।

वहां एक अजीब सा सन्नाटा था......

...... वह सिर्फ अपने लिये प्रार्थना करने लगा था।

एक सुन्दर मौत

छुट्टी का दिन था।

वह इस भीड़ में किसी दोस्त को तलाश कर रहा था। उसकी आंखों की पुतलियों में एक अजीब तरह की सफेदी छा गई थी, जिसके लिए उसका समूचा चेहरा बर्फ में लेटा हुआ एक बासी शव जैसा लग रहा था। अगर इस समय यहां यह भीड़ नहीं होती, तो सम्भव है फुटपाथ के किसी हिस्से पर बैठ जाता और निरुद्देश्य ही कुछ सोचने लगता। बहुत कुछ सोद्देश्य

सोच लेने के बाद कभी-कभी निरुद्देश्य सोचना भी किसी सीमा तक ज़रूरी हो जाता। ऐसी परिस्थिति में बहुत कुछ सोचा जा सकता। मसलन, कोई क्रान्ति की कहानी, अख़बार में छपे मोटे अक्षरों वाले कुछ समाचार, कोई हिट हिरोइन की अदाएं या प्रधान मंत्री के भाषण—आश्वासन !

अक्सर वह ऐसा महसूस करता है, गोया उसके जिस्म के भीतर से कोई तीखा सा तेज़ाब पूरी रफ़्तार के साथ बह रहा हो। ऐसे में समूचा शरीर बहुत गर्म होकर जलने सा लगता और अंगुलियों का कसाव एकदम ढीला पड़ जाता।...लेकिन तकलीफ़ के बावजूद यह एक ज़रूरी तब्दीली है। इतनी ज़रूरी कि इसके अलावा नसों के बीच खून का बहाव गोया एकाएक रुक जाता है।....और तब एक बेहद ख़तरनाक स्थिति में अपने को छोड़ने के बाद अपनी असामर्थ्य और भी तेज होने लगती, ख़तरनाक होने लगती।

उसे अचानक ऐसा महसूस होने लगा था, जैसे उसकी शरीर की पेशियां बुरी तरह फड़क रही हों। महज़ इतना ही नहीं, उसे अपने शरीर की नसें चटकती हुई भी लग रही थीं। अगर इस वक्त अगल-बगल में कोई आईना होता, तो वह चलकर देखता की उसकी आंखों में वाक़ई लाल डोरे भूल रहे हैं या नहीं आईना न रहने के बावजूद उसे निश्चित रूप में मालूम था कि बेतरतीब दाढ़ी के बढ़ जाने की वजह से उसका चेहरा खुरदुरा पड़ गया है।

सड़क का बायीं तरफ मुड़ जाना उसके अन्दर एक गहरा विषाद उपस्थित कर रहा था। खेत की मेड़ों पर चलते समय भी अक्सर ऐसा महसूस होने लगता है। यह शाम का वक्त है मगर उसे लग रहा था जैसे वह रात के सन्नाटे में किसी खेत की मेड़ से बहुत तेजी से गुजर रहा हो। मगर इस तरह मेड़ से गुजरना निश्चय ही उसके लिए एक बेवकूफी

है। निरर्थक भी। हैरान होकर जब वह खेतों की ओर देखता है तो उसके शरीर का एक-एक अणु उसी के अस्तित्व के विरुद्ध विद्रोह कर उठता। और तब वह एक पिछवारे के असमर्थ आदमी सा कांपने लगता। सूखी और फटी हुई ज़मीन के चेहरे से धूल के बगूले व्यंग्य से उसे घूर कर उड़ने लगते।

अनजाने ही किसी अपरिचित आक्रोश से वह अपने हाथों को झटकार रहा था। इस समय उसे महसूस हो रहा था कि जैसे वह तेज़ बुखार से आक्रांत है। पावों की पिंडलियों में उसे एक तीखा दर्द महसूस हो रहा था। इतनी सारी कमज़ोरियों के बावजूद वह पहले की तरह तीक्ष्ण आक्रोश से बांहों को फटकारता रहा।

शाम गहरा चुकने के बाद वह उठ खड़ा हुआ था और कुछ भी बिना सोचे आगे की ओर तेज़ कदमों से बढ़ने लगा था। उसके चेहरे में अब एक मासूम ख़ामोशी थी। इस ख़ामोशी में ही उसे लग रहा था जैसे अब वह बहुत बूढ़ा हो चुका है। उसकी उम्र अब अचानक इतनी बढ़ गई कि इस व्यापकत्व से उसमें एक संत्रास की भावना छा गई थी। काफी दूर चल लेने के बाद अचानक वह चौंक कर ठहर गया था। तब लग रहा था कि जैसे इस सीमा तक आकर शहर खत्म हो गया है।

जेब में हाथ डालकर वह पर्स को टटोलता रहा। पर्स को वह बन्द मुट्ठी में देर तक दबाये रहा। वह सोच रहा था कि पर्स के अन्दर उसका आखिरी दस का पत्ता पड़ा हुआ है। अचानक दस रुपये के स्मरण मात्र से वह पुलकित हो उठा था। मगर दूसरे ही क्षण इतना विगलित हो

जाना उसे एक मूर्खता लगी थी। आखिर दस ही रुपये हैं, कोई बीस पच्चीस तो नहीं।

यह आठवां दिन है।

बीता हुआ कल सातवां दिन था और आने वाला कल नौवां दिन होगा। नौ दिनों के इस अरसे में वह कुछ नहीं तो शहर की तारकोल लिपटी सड़कों पर से सौ मील चल चुकेगा। मगर फिर भी बहुत सारा पथ चलने को बाकी रह जायेगा।

पार्वती क्या सोचती होगी···! उसे इच्छा हुई कि वह हवा में निरुद्देश्य हो पार्वती के नाम अपनी आवाज छितरा दे। अपनी शौहर की औक़ात से नावाकिफ़ है वह। कम से कम पार्वती के बारे में इतना वह जानता है।

···अब वह झुंझलाने लगा था। यह झुंझलाहट चन्द असहाय की थी। उसे अपने सामने हवा में हिलते हुए 'नो वैकेन्सी' के सुर्ख बोर्ड अनायास ही नज़र आ रहे थे। वह फिर भटकने लगा था। और काफी देर तक भटकते रहने के बाद चारमीनार के पैकेट में से एक सिग्रेट निकालकर पूरी ताकत लगाकर कश खींच रहा था।

खामोशी में अचानक वह इस कदर विद्रोही बन गया था कि अपना ही अस्तित्व उसके लिए असहाय और निरर्थक सा महसूस होने लगा था। अचानक उसे एक कहानी याद आयी थी।....एक मुर्गा था। मुर्गा गांव छोड़कर शहर की ओर आ गया था। फिर एक विशाल शानदार महल के एक कोने में रखे टूटे हुए पैकिंग बक्सों के साथ वह रह रहा था। रहने के लिए उसे काफी कोशिश के बाद यह जगह मिल जरूर गई थी मगर इसके बाद मुंह के लिए कौर की ज़रूरत थी। फिर अचानक एक दिन वह भटक कर अस्तबल की तरफ चला गया था। वहाँ उसे पर्याप्त भोजन नज़र आया था मगर थोड़े ही दिनों में कुछ ऐसे नंगे किस्म के लोग भोजन की तलाश में वहां आ टपके थे, जिन्हें भोजन की तलाश

थी ।···अब असहाय मुर्गे का कौर छिन गया था । तब वह सपना देखता था । महल के अन्दर सफेद मेज और उस पर बिछी हुई सफेद चादर । मेज पर भोजन है···अनेक अनेक और अनेक । फिर एक दिन वाक़ई वह मुर्गा महल के अन्दर घुस पाया । सीधे चला आया था । सफेद चादर से मुड़ी हुई सफेद मेज पर जहां बहुत सारे भोजन रखे हैं । मगर वह भोजन करने नहीं, भोजन के तौर पर आया था !···

सिग्रेट को पी चुकने के बाद अंतिम अंश को वह हवा में उछाल कर फेंकने लगा । जैसे उसकी उंगलियों में से कोई कीमती सी चीज छूटी जा रही हो ।

उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे उसके शरीर के प्रत्येक खंड में आग की लपटें छा गई हों और उसके शरीर का हरेक अंग सुर्ख अंगारों में परिणित हो रहा हो ।

वह शहर की सीमा से आगे बढ़ गया था और कुछ भी बिना सोचे शहर की विपरीत दिशा में दौड़ने लगा था । बहुत देर दौड़ते रहने के कारण उसे पसीना आ रहा था मगर पसीने के बावजूद उसे अपने अन्दर तीव्र शीत का एक उदास कम्पन महसूस हो रहा था । वह भयभीत नजरों से अपने चारों ओर के दायरे को घूर रहा था ।···मगर एक तैरते हुए शून्य के अलावा कुछ भी देख पाने में वह क़तई असमर्थ रहा ।

इसमें लगातार हारते रहने का एक बढ़ता हुआ अहसास है । देर तक अपने को तोड़ने के बाद ऐसा लगता है, गोया पूरा माहौल एकदम घूमता हुआ सा हो गया हो और तब अपने खिलाफ एक लिज-लिजापन छाने लगता ।

उसका कोट इस काबिल कतई नहीं था कि शीत के थपेड़ों से उसे पूरे

यकीन के साथ बचा सके। पीछे की तरफ़ का एक लम्बा हिस्सा फटा हुआ था जो विपरीत रंग के धागों से अकुशल हाथों से सिला हुआ था।

अब उसे जाड़ा इस क़दर तेज महसूस हो रहा था कि जल्दी से वह एक पुआल के ढेर के अन्दर घुस गया। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह स्थान उससे पहले ही कुछ कुत्तों ने आकर घेर रखा था। सारे के सारे कुत्ते उसे अपने लिये बहुत दिनों बाद चन्द हम सफ़र जीव लग रहे थे।

उसे लग रहा था कि जैसे उसके बगल में एक शव जल रहा है।.....और रात होने के बावजूद समूचा आकाश गिद्धों से भरकर उस शव की तरफ़ विस्फारित आंखों से देख रहा है। वह कुत्तों की आंखों की ओर देख रहा था। सारे कुत्तों की आंखें जैसे महज एक ही घटना की गवाही दे रही थीं—वह है, थोड़ी ही दूर में एक लाश का पड़ा होना।

उसे जी कर रहा था, वह उठकर लाश तक चला जाये और पानी से उसके ऊपर जलती हुई लपटों को बुझाकर आकाश के गिद्धों और ज़मीन के कुत्तों को एक स्वादिष्ट भोजन के लिये निमंत्रित करे।

शहर के छोर से वह गांव की मेड़ों को अन्धेरे के बावजूद बहुत आसानी से देख पा रहा था। मेड़ों के अस्तित्व को स्वीकार करना उसे फिर बेवकूफी और निरर्थक सी लग रही थी। आखिर खेत कहां? उजड़ी हुई ज़मीन में सूखी रेत की परतें बिछी हुई थीं और उन पर धूल के बगूले अनायास ही निर्लज्ज की तरह डटे हुए थे।.....जैसे वे हमेशा से वहीं रहते हों।

उसे अचानक महसूस होने लगा था, जैसे उसका शरीर चारों ओर के दवाबों से चिपक कर छोटा हो गया हो। वह इतना छोटा और असहाय हो गया है कि अब आदमी कहलाने के क़ाबिल ही नहीं रहा। वह विस्फारित नजरों से अपने असहाय अस्तित्व की ओर देखता रहा अन्त में उसे महसूस होने लगा था कि अब बहुत जल्द ही इतना छोटा हो जायेगा कि वह नज़र तक नहीं आयेगा।

वह हथेलियों से अपना मुंह ढांप कर औंधा हो लेट गया। अब उसकी सांस बहुत तेज़ चलने लगी थी और शरीर में रक्त का संचालन तीव्र गति से नशों को तोड़कर तूफान खड़ा कर रहा था।

...वह अपने को इस क़दर असहाय महसूस करने लगा था कि औंधा होकर पड़े रहने के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प ही न था। इस स्थिति में उसे लग रहा था, जैसे उसका शरीर हफ़्ते भर का पुराना कोई बासी लाश है, जिस पर हज़ारों और लाखों कीड़े अनायास ही एक खास तेज़ी में दौड़ रहे हैं।

.....उसे लग रहा था, उसका शरीर एक सफेद और रेशमी कफ़न से ढका हुआ है। मौत को सुन्दर बनाने की इस प्रक्रिया में उसे हंसी आ रही थी मगर प्रतिक्रिया में हंसना भी उसके लिये मुमकिन नहीं था।

...उसे महसूस हो रहा था, आकाश में फिर से गिद्ध उड़ने लगे हैं और ज़मीन के हफ्तों से भूखे रहने वाले कुत्तों की नज़रों के साथ सारे गिद्ध उसकी तरफ बहुत तेज़ी से भाग कर आ रहे हैं। मगर अब उसे कुछ भी अफ़सोस नहीं हो रहा था क्योंकि उसके अकेले की मौत बहुत सारे भूखों के लिये एक चरम अनुभूति बन सकेगी.........

उसे अपने दोस्तों और पत्नी के चेहरे एकदम याद आ गए थे।···लेकिन उसे लगा था, गोया उनके चेहरों का बादामी रंग एकदम सफेद, एकदम फीका पड़ गया हो। वह बहुत तेजी से अपने बारे में सोचते हुए कुहनी को कंधे की हड्डियों के नजदीक ले आया था। ···तब अरसे बाद वह अपने आपको नितांत निरीह, शरीफ लगने लगा था। गिद्धों और कुत्तों के लिए एक चरम अनुभूति भी।

प्रेत और घर

इंजन की सीटी बोलते ही बाबूजी के चेहरे की शिकनें उभरने लगी थीं। माथे पर पसीने की बूंदों का जमाव पारदर्शी होने के बावजूद संपूर्ण चेहरा कोहरे के पर्दे में ढका हुआ सा लग रहा था। यह सब अपने को बिखेरकर खत्म कर देने की तकलीफ़ है, जिसका सिलसिला एक लम्बे अरसे से अजगर की तरह रेंग सा रहा है।

'काके……'बाबूजी शायद कुछ कहना चाह रहे थे लेकिन उनके होंठ कांप

कर स्थिर हो गये थे। उन स्थिर होंठों पर बीड़ी पीते रहने के कारण बने धब्बे इस समय नज़र नहीं आ रहे थे। उन धब्बों की जगह कुछ-कुछ सफेदी सी पुत गयी थी और इस कारण दोनों ही होंठ बेजान, ठूंठ से लग रहे थे। वे अपने चेहरे के खालीपन से वाक़िफ़ रहे होंगे लेकिन स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे ख़ुद को किसी भी तरह, मदद कर पाते।

बिट्टू को उन्होंने अपनी गोदी में ले लिया था। उसकी पीठ सहलाते समय उनकी हथेली हवा के झोंकों से हिलते हुए पर्दे की तरह बराबर कांपती जा रही थी तब एकदम वे मेरी ओर से नज़र हटा कर दूसरी तरफ देखने लगे थे। मैं काफी संतुलित था लेकिन लग रहा था, गोया मैं अपने को बहुत तेजी से खत्म कर रहा होऊं।

कनखियों से मैं बाबूजी के कपड़ों को देख रहा था। कपड़ों पर उसी तरह सलवटें चिपकी हुई हैं। सलवटों से अधिक कपड़ों का मैला होना खटक रहा था। कोट के ऊपर के हिस्से में, कॉलर की तरफ तेल का पर्दा सालों से स्थायी रूप में जम गया है। एकाध जगह फट जाने के कारण दूसरे रंगों के धागों से सिली हुई थी। मगर कुहनियों की तरफ़ के छेद इतने बड़े थे कि उन्हें सिलना संभव नहीं था। उन्हीं जगहों से दोनों कुहनियां अनायास बाहर की ओर झांक रही थीं......गोया मेरे खिलाफ़ यह बाबूजी की कोई ज़बरदस्त मजबूरी हो।

अब इंजन की आखिरी सीटी बोल रही थी। बाबूजी की गोद से बिट्टू को लेकर, झुककर मैंने मत्था टेक दिया था। वे खामोश होकर कुछ देर तक खड़े रहे और अन्त में डिब्बे में जरूरत से ज्यादा तेजी से घुस कर बैठ गये थे।

सविता की आवाज कांप रही थी, 'दिल्ली ले चलो अब बिट्टू को। मेरा दिल घबरा रहा है।'

'थोड़े दिन और देख लो। बाबूजी भी आ रहे हैं, मुमकिन है, वे कुछ और सलाह दें।'

फिर सविता खामोश हो गयी थी। उसका खामोश होना अपने को तोड़ने का एक तीखा सा संकेत है। यह उसकी कमजोरी है कि देर तक खामोश रहने के बावजूद वह अपने को समेटने की भूमिका नहीं बना सकती। मैं जानता हूं, कुछ ही देर बाद वह एक दम कमज़ोर पड़ जाएगी और तब उदास आंखों से सड़क की भीड़ को देखने के अलावा कोई और चारा नहीं रह जाएगा। यह उसकी मज़बूरी है, तकलीफ़ भी।

'अब सात बजे हैं। कैपसूल दे दो।' घड़ी देख कर मैंने तेजी के साथ कहा था।

'कैपसूल' शब्द को सुनते ही बिट्टू करवटें बदलने लगा था। तब वह नितांत निरीह और असहाय लगने लगा था। बिल्कुल असहाय।

डॉक्टर के आते ही सविता उठ खड़ी होती है। व्यग्र होकर मैं कुर्सी को खिसका कर सामने कर देता हूं। उस समय सविता कुछ नहीं कहती। लेकिन इंजेक्शन देने के लिए सिरिंज खोलते ही वह बोल पड़ती है, 'किसमें सुई भोंकते हैं, डॉक्टर सा'ब ? अब तो हड्डियां ही हड्डियां रह गयी हैं सिर्फ।'

फिर भी उसने निर्लज्ज सा सुई भोंक दिया था और आखिर में अपना बैग उठा कर चलते वक्त क़तई सहमा हुआ और बेवकूफ़ लगने लगा था।

बाबू जी आ गये थे।

सविता खुले सिर पर साड़ी का एक हिस्सा चढ़ा कर मत्था टेकती है। बाबूजी दाहिना हाथ उठा कर आशीर्वाद देते हैं और मुझे मत्था टेकने का मौका दिये बगैर बिट्टू की चारपाई की ओर बढ़ जाते हैं।

'क्यों बई, हो क्या गया ?' जिज्ञासा से बाबूजी बिट्टू की ओर झुक जाते हैं और हौले-हौले उसके शरीर पर हाथ फेरने लगते हैं।

'आप नहा-धो कर थोड़ी देर आराम कर लीजिए। रात भर का सफ़र था।' बाबूजी के पांवों को छू लेने के बाद मैं कहता हुआ उठ खड़ा हुआ था।

इस समय रात अच्छी तरह बीती तक नहीं है। बाबूजी बिस्तर छोड़ कर उठ जाते हैं और अँधेरे में सामने की तरफ खुले दरवाजे से बढ़ने लगते हैं। थोड़ी ही देर में जब लौट आते हैं, तब जाड़े का कंपन उनके संपूर्ण शरीर में छाने लगता है। मगर किसी भी ओर ध्यान दिये बिना बाबू जी अभी तोड़े हुए करैले के पत्तों को कूटने लगते हैं। और लगभग आधा घंटा तक कूट लेने के बाद निकले हुए रस को निचोड़ कर फेंक देते हैं और पत्तियों को कूटी हुई नीम की निबौलियों के साथ मिला कर छोटी-छोटी गोलियां बना लेते हैं।

अंधेरा छंट जाने से पहले ही बाबू जी कृत्रिम खांसी से अपने आने की सूचना दे कर सविता के साथ लेटे हुए बिट्टू के नज़दीक आ जाते हैं। विस्फारित आंखों से सविता बाबू जी को देखती रहती है। विरक्ति से उसका रोम-रोम झुंझलाने लगता है।

'काके !' बाबू जी धीरे से आवाज देते हैं, 'बिट्टू के लिए दवा है ।'

इस बार सविता झुंझलाती है, 'करैले की पत्तियां गाय-भैंस की तरह डकारने से क्या होगा ? डॉक्टर का इलाज चल ही रहा है ।'

बाबू जी ने उत्तर में कुछ नहीं कहा था । परिवर्तन सिर्फ इतना ज़रूर हुआ था कि उनके हिलते हुए हाथ स्थिर होने लगे थे ।

सविता झुंझला कर हट जाती है, तो मैं बाबूजी के हाथ से पिसे हुए पत्तों को ले कर जल्दी से बिट्टू के मुंह में ठूंस देता हूं । बिट्टू मुंह बिचकाता है और जीभ को उलट कर मुंह के अन्दर की चीजें बाहर फेंक देना चाहता है । बाबूजी उसकी पीठ पर थपकियां लगाते रहते है और तब बड़ी मुश्किल से बिट्टू ज़हरनुमा इस दवा को निगल पाता है ।

बिट्टू को दिल्ली ले जाने की बात बाबूजी के सामने रखता हूं तो वह सहज रूप में विरोध करते हैं, 'मैं तो हूं, कोई फिकर नहीं अब ।'

सविता बाबूजी को निरीक्षण की मुद्रा में देखती रहती हैं और आखिर में भौंहों को ऊपर की ओर तान कर सामने की ओर बढ़ जाती है । तब बाबूजी की दृष्टि अचानक पथराने लगी थी ।

दोपहर को सविता के सो जाने के बाद बिट्टू के शरीर को पीसी हुई हल्दी के साथ चूना मिला कर बाबू जी रगड़ने लगते हैं । बिट्टू को शायद इससे कुछ आराम महसूस होता है । आंखें मूंद कर वह औंधा सा पड़ा रहता है । बाबूजी को बड़ी राहत महसूस होती है । इस समय सविता उनके चेहरे पर नहीं है ।

थोड़ी ही देर में डाकिया आता है तो आवाज़ सुन कर सविता की आंख खुल जाती है । सविता की आंख खोलने की प्रतिक्रिया में बाबूजी बुरी तरह कांपने लगते हैं । उन्हें कुछ ऐसा महसूस होने लगता है, जैसे अभी-

अभी उनसे भारी गुनाह हो गया हो। वह धीरे से उठ खड़े होते हैं और झुकी निगाहों से निकल कर बाहर, बरामदे में बैठ जाते हैं।

'काके,' कुछ रुक कर बाबूजी कहते हैं, 'दिल्ली ले जा बिट्टू को।'

बाबूजी के सीने की टीसती हुई तकलीफ मैं जानता हूं। जल्दी से सिलसिला बदल कर खेती की बात शुरू कर देता हूं। खेती की बात, अम्मा के गुज़र जाने की बात।...वैसे मैं बिलकुल वाक़िफ़ हूं, वह इस वक्त कुछ भी जवाब नहीं दे पायेंगे।

एक ख़ासे नाटक की तरह आज तीन महीने बाद बिट्टू ठीक है। दिल्ली जाने की ज़रूरत सविता के महसूस करने के बावजूद, बाबूजी के कारण मैंने नहीं महसूस की। डॉक्टर और बाबूजी, दोनों ही के इलाज दोनों ही की असहमति से चलते रहे। किन्तु ये दो असहमतियां उतनी ख़तरनाक नहीं थीं, जितनी सविता की अस्वीकृति।

शाम को बिट्टू को लेकर घूम आने के बाद बाबूजी बाहर बरामदे में बैठ गये थे।

अन्दर से सविता झुंझलाये लहजे में आवाज़ फेंकती है, बिट्टू।' वह इतनी ज़ोर से चिल्लाती है कि बाबूजी का शरीर कांपने लगता है। कांपते वक्त मजबूरी में वे इस क़दर निरीह और असहाय लगने लगते हैं कि एकदम कुछ भी हो जाने के ख़तरे के अहसास से शरीर की हड्डियां चटखती हुई लग जातीं।

'क्या हुआ ? चिल्लाती क्यों हो इतनी ज़ोर ?' सविता की ओर एक अलग अन्दाज़ से मैं देखने लगता था।

'होगा क्या ?' सविता जैसे विस्फोटित होने लगती है, 'अब तक

नवाब के बेटे को स्वेटर तक पहनने की फ़ुर्सत नहीं हुई। कहीं कुछ हो गया तो किसी को क्या, भुगतना तो मुझे ही पड़ेगा।'

मैं चुप हो धीरे-धीरे बरामदे की ओर बढ़ जाता हूं और बाबूजी से बिना कुछ कहे उनके पीछे खड़ा हो जाता हूँ। बिट्टू बाबूजी की गोद में निर्विकार सा शांत बैठा हुआ है।

बिट्टू के सारे शरीर में फोड़े निकल आये हैं। कारण कुछ भी हो सकता है, संभव है, 'कैप्सूल' की गर्मी हो। फोड़ों की वजह से दो दिन से हल्का-हल्का बुखार भी चढ़ा हुआ है। बाबूजी की परेशानी इस समय पहले की अपेक्षा और भी ज्यादा बढ़ी हुई लगती है। लेकिन इसके बावजूद वे बिट्टू के लिए कुछ भी उपचार नहीं करते। फिर फोड़े और भी बढ़ने लगे थे। और सारे शरीर में छा गये थे।

आज दोपहर को कहीं जा कर पुराने अखबार के एक हिस्से में बांध कर बाबूजी कोई चूरन ले आये थे। उसी को पानी में घोलकर चीनी के साथ वे बिट्टू को पिला रहे हैं।

इस पर भी सविता की आवाज भभकती है, 'किसका क्या ? जो कुछ होगा, मुझे ही भुगतना पड़ेगा।'

'चुप भी रहती हो या नहीं ?' सविता के खिलाफ अरसे बाद यह मेरी एक जरूरी मौजूदगी थी।

आज बिट्टू ने आरोग्य-स्नान किया। गोया यह भी नाटक का कोई अंक हो।

बाबूजी झोले में अपना सामान रख रहे थे। गाड़ी दोपहर को डेढ़ बजे

जायगी, लेकिन अभी आठ ही बजे से वे तैयार हो रहे हैं। एक बार जी में आता है, उनका पांव पकड़ कर सविता के लिए माफी मांग लूं। चाहा था लेकिन कुछ भी नहीं किया था। चाह कर भी कुछ भी बाबूजी से पूछ नहीं सका था। पूछने का मतलब है, उन्हें दोबारा ज़लील करना।

इंजन ने आखिरी सीटी दे दी थी। सीटी की आवाज इतनी तेज़ है कि स्टेशन का सारा शोरगुल मुझे सुनायी नहीं देता। गाड़ी धीरे-धीरे बढ़ने लगी है और मैं बिट्टू को गोद में लेकर उसी रफ्तार से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा हूं।···अब 'गार्ड' के डिब्बे के पीछे का हिस्सा भर देख पा रहा हूं, जिसमें बाबूजी के न होने का खालीपन मुझमें और भी तीखा हो रहा है, होता जा रहा है।

अथवा

·गोदाम ।

गोदाम से सटा हुआ टीन का छप्पर । पहले यहां टूटे हुए पैकिंग बॉक्स और गैर ज़रूरी सामान रखे जाते थे। लेकिन टीन में छेद हो जाने के कारण इस जगह को खाली कर दिया गया था। सारी बन्दिशें हट गयी थीं और यह खाली जगह अगली रात से कुत्तों से आबाद होने लगी थी।

···लेकिन यह सब पुरानी बातें हैं। बहुत पुरानी ।

कुत्तों से हक छिन गया था और वहां कुछ लोगों ने रहना शुरू कर दिया था। शुरू में वे थोड़े थे। तब छप्पर के नीचे की बहुत सारी जगह छूटी हुई रहती थी।

लेकिन अब वहां बहुत सारे आदमी रहते हैं। औरत-मर्द, दोनों। कभी कोई जगह खाली मिल जाती तो एक-आध कुत्ते भी आ जाते। आदमी और कुत्ते बहुत इत्मीनान से रात भर यों सोये रहते जैसे रिश्ता बहुत पुराना हो।

कोने की तरफ़ सोनेवाला लंगड़ा कुनमुनाने लगा था। जब उसे कुनमुनाते हुए काफी देर हो गयी, तब गोदाम की दीवार से सटकर सोनेवाली वह लम्बी-सी औरत सचेत हो गयी थी। पहले वह सिर्फ उस दाढ़ीवाले अंधे पर ही सचेत रहती थी। लेकिन एक अर्से से उसने अपना बिस्तर हटा लिया था और दीवार के पास आ गयी थी।

वह उठी। उठकर थोड़ी देर तक अपने शरीर को तोड़ती-सी रही। लेकिन लंगड़े के फिर से कुनमुनाते ही वह बहुत सतर्क हो गयी थी। वह आगे बढ़ आयी थी और लंगड़े के ऊपर एक फटी हुई चद्दर डाल दी थी।

बुड्ढा जाग गया था। उसने आंखें खोली थीं और फिर तुरंत बंद करके ज़बान से एक भद्दी किस्म की गाली उँडेल दी थी। लेकिन उसकी आवाज़ इतनी हलकी और कमज़ोर रही कि उस पर कुछ भी प्रतिक्रिया होना मुमकिन नहीं था। सिर्फ इतना ज़रूर हुआ था कि गाली उंडेलने के साथ वह हाथों को भी झटकारने लगा था। उसके हाथ का दबाव एक मरियल

से पिल्ले पर पड़ गया था और तब बहुत कमज़ोर किस्म की "कूं-कूं" आवाज़ पैदा हुई थी।

ठीक बीचोंबीच सोनेवाला अधेड़ अब करवट बदलने के बाद अपनी औरत से करीब हो गया था। अब उसके शरीर की गर्मी महसूस कर सकता था और उसकी गर्म सांसों को अपने में खौलते हुए पा सकता था। लेकिन वह शरीफ़ आदमी की तरह बेसुध सोया रहा और देर तक एक ही मुद्रा में सोता रहा। जबकि उसकी आदत हर आधे घंटे पर करवट बदलना है।

कुत्ते का पिल्ला देर तक कूं-कूं करता रहा। शुरू में उसकी आवाज़ तेज़ थी लेकिन बाद में इतनी हल्की हो गयी थी कि जगे हुए लोगों को भी तकलीफ़ नहीं हो रही थी।

बुड्ढे ने फिर से अपनी आंखें खोल ली थीं और पिल्ले को सुर्ख आंखों से घूरने लगा था। ऐसा कम ही होता है जबकि उसकी आंखें सुर्ख न रहती हों। लेकिन अब उसकी आंखें भयावह भी लगीं।

वह लम्बी औरत एकाएक उस तरफ देखकर डर गयी थी और तब उसने अपनी आंखों के ऊपर कुहनी रख ली थी। इतना करने के बावजूद जब उसका डर खत्म नहीं हुआ वह एकाएक परेशान हो गयी थी। उसने अपना बिस्तर खाली कर दिया था और लंगड़े से सटकर सो गयी थी। लंगड़ा हड़बड़ाने लगा था।...और इससे पहले कि वह अपने मुंह से कोई अजीब-सी आवाज़ निकालता, वह औरत सतर्क हो गयी थी। उसने अपनी हथेली को लंगड़े के मुंह पर रख दिया था।

अब वे एकाएक डरने लगे थे और बुड्ढे की ओर पीठ फेर कर मुड़े हुए घुटनों को लम्बा कर लिया था।

बुड्ढा खांसने लगा था और देर तक खांसते रहने के बाद उठकर बीड़ी पीने लगा था। बीड़ी पीते वक़्त वह अजीब-सी भाषा में देर तक बुदबुदाता रहा। लेकिन उसके शब्द चूंकि आपस में टक्कर मार रहे थे इसलिए उसका कथ्य खुद उसके लिए भी बहुत मुश्किल रहा होगा।

लगातार तीन बीड़ी पी चुकने के बाद एकाएक वह खामोश हो गया। वह सो गया था और उसका चेहरा बहुत निरीह, बहुत शरीफ लगने लगा था।

चपटी नाकवाला, वह पहलवान क़िस्म का आदमी बहुत सतर्कता से अपने आस-पास घूरने लगा था। लेकिन वह बहुत जल्द आश्वस्त हो सका था कि किसी की भी नज़र उस पर टिकी नहीं है।

वह उठा और खंभे की तरफ बढ़ गया।

शुरू में वह कुछ हड़बड़ाने ज़रूर लगा था लेकिन बाद में ख़ुद को संभाल लिया था।

वह नज़दीक जाकर खड़ा हो गया था।

…कुछ देर बाद अपनी दाईं हथेली से उसने उस नीली साड़ीवाली औरत का शरीर सहलाना शुरू कर दिया था। एक ही हाथ होने के कारण उसे बेहद परेशानी हो रही थी लेकिन इसके बावजूद वह स्थिर था।

वह जग गई थी और फटी-फटी आंखों से अपने ऊपर झुके आदमी को घूर रही थी। यह एक पुराना मसला था और उसे क़तई ताज्जुब नहीं हो रहा था।

उसने उसका शरीर बुरी तरह गुदगुदा दिया था। वह एकाएक हांफने लगी थी और उसका हाथ पकड़ लिया था।

शुरू में वह बुत-सा बना रहा लेकिन कुछ ही देर में झटके के साथ अपना हाथ छुड़ाकर और भी तेज़ बन गया।

दबी हुई आवाज़ में वह नीली साड़ीवाली कुछ बोल गयी थी। लेकिन उसकी आवाज़ में से एक खालीपन के अलावा कुछ निकलना मुमकिन नहीं हुआ था।

चपटी नाकवाला आदमी उस पर और भी ज्यादा झुक आया था और उसके कान में कुछ फ़ुसफ़ुसाने लगा था।

उसकी आवाज़ भी उसी तरह खाली थी।

नीली साड़ी वाली औरत अब झुंझलाने लगी थी और अपनी हथेलियों को छाती के ऊपर रखकर करवट बदलने लगी थी।

वह और भी करीब आ गया था और उसे करवट बदलने से रोक कर एकाएक बहुत खुश हो उठा था।

…नीली साड़ी वाली औरत ने अब बिस्तर छोड़ दिया था और चद्दर को अपने साथ उठाकर अपने आस-पास के लोगों को बहुत सतर्कता से देने लगी थी। कुछ ही देर पहले चपटी नाकवाला आदमी भी ठीक इसी तरह सोये हुए दूसरे लोगों को देर तक घूरता रहा था।

.. चपटी नाकवाला आदमी कुछ आगे बढ़ गया और नीली साड़ीवाली औरत, जिसकी की नाक सड़कर गिर चुकी है, हल्के कदम से उसके पीछे-पीछे चलने लगी थी।

बुड्ढे की नींद फिर से टूट गई थी और दो खाली बिस्तरों की ओर नजर जाते ही उसने कुढ़ना शुरू किया था। फिर वह देर तक निहायत भद्दी और ऊलजलूल गालियां देता रहा!

लेकिन कुछ ही देर में उन ख़ाली बिस्तरों पर सोने के लिए चार-छः कुत्ते आ गये थे और तब वह खामोश हो गया था। वह ख़ामोश था इसके बावजूद आंखों में तीखी-सी जलन महसूस हो रही थी। तब देर तक वह अपनी खुरदुरी हथेलियों से समूचे चेहरे और आंखों को मलता रहा था।

लंगड़े ने अपने साथ सोयी उस लम्बी औरत को पूरी ताक़त के साथ पकड़ लिया था। उसका बायां हाथ इस तरह टेढ़ा और कमज़ोर न होता तो उसका ख़याल है किसी को भोंकने में उसे इस क़दर तकलीफ न होती। यह औरत अब उसे निहायत अच्छी और सिर्फ अपनी लगी। हालांकि उसकी आंख नहीं थी और होंठ का एक ख़ासा हिस्सा कटा हुआ था फिर भी वह ख़ूबसूरत लगी।…वह भूलने की कोशिश कर रहा था कि पहले वह उस दाढ़ीवाले अंधे के नज़दीक ही अपना बिस्तर लगाया करती थी।

चपटीनाकवाला आदमी गोदाम के पीछे आ गया था और अपनी पुरानी जगह से कुत्तों को हटाकर गालियां देने लगा था। उसकी आवाज़ कुछ तेज थी और काफी देर तक गाली देने के बाद अब एकाएक वह हांफने-सा लगा था।

तब तक नीली साड़ीवाली औरत वहां आ गई थी और नज़दीक पहुंचकर उसने अपनी चद्दर बिछा दी थी।

'स्साला। खूसट है कुत्ते का पिल्ला।' चपटी नाकवाला आदमी एकाएक बुड्ढे के ऊपर गालियां फेंकने लगा था—बहुत ही मामूली किस्म की गालियां।

'जलता है।' नीली साड़ीवाली औरत ने कहा था।

'स्साला मर्द बनता है, मर्द। आंखें निकाल लूंगा किसी दिन। स्साला जानता नहीं मेरा ग़ुस्सा भी क्या है?'

'ग़ुस्सा?'

'और नहीं तो क्या? तूने देखा ही क्या? औरत की जाऽऽत·····' अन्तिम शब्द पर उसने ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर लगाया था!

'तू मर्द है मर्द?'

उसने नीली साड़ीवाली औरत को जलती हुई आंखों से घूरना शुरू किया था। ठीक बुड्ढे की तरह·····

वह हंसी थी।

'हंसती है, क्या? ले तू भी हंस ले। उसकी आवाज में याचना थी और एकाएक वह बहुत कमज़ोर हो गया था।

'सुबह मेला है—शिवगंगा का मेला।' औरत ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात बदल दी थी।

वह चुप था और बहुत ही दयनीय मुद्रा में दूसरी तरफ देखने लगा था। लेकिन चारों तरफ चूंकि अंधेरा था इसलिए उनकी निगाहें फिर से उस औरत के आस-पास आ गई थीं।

औरत उसके पास खिसक आयी थी और आख़िर में जरूरत से ज्यादा सटकर बैठ गई थी।

चपटी नाकवाला आदमी फिर से खुश हो उठा था और एकाएक उसके शरीर को गुदगुदाना शुरू कर दिया था।

वह चुप थी और एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद चद्दर पर इत्मीनान के साथ लेट गई थी। घुटनों को उसने लम्बा कर लिया था!

चपटी नाकवाला आदमी शुरू में तो उससे सटकर बैठा था लेकिन फिर बहुत जल्द उस चद्दर पर लेट गया था। अब वह अपने बीच उसका गर्म शरीर बहुत आसानी के महसूस कर पा रहा था।

'चल, हम लोग कलकत्ता-बम्बई चलें। काफ़ी देर की ख़ामोशी के बाद वह बोल रहा था।

'कलकत्ता-बम्बई ?'

'हां ऽ ऽ ऽ।'

'दूर है···भौत दूर !'

'लेकिन वहां साला खूसट बुड्ढा तो नहीं होगा !'

'कोई और हो शायद।'

'हमलोग अलग रहेंगे। तू और मैं।'

'सिर्फ ?'

'नहीं...तेरे दो-चार मर्द और भी रहेंगे साथ।' इस बार वह खिसियाने लगा था।

वह चुप हो गयी थी।

चपटी नाकवाला आदमी अब उसका समूचा शरीर गुदगुदाने के बाद उसकी साड़ी को पूरी ताकत के साथ मुट्ठी में भींच रहा था।

'स्साले ये कुत्ते भी घूरते हैं।' वह बोला था।

'हां।' उसने संक्षिप्त जवाब दिया था।

'स्साली गर्मी आ गयी अब !'

और इस बात पर वह कुछ नहीं बोली थी। सिर्फ इतना जरूर हुआ था, वह सिकुड़ने लगी थी। घुटनों को मोड़ना चाहा था।

नीली साड़ीवाली औरत को गुदगुदाते वक्त बीच में एक बार वह अपनी अंगुलियों में एक बेहद तीखा दर्द महसूस करने लगा था। लेकिन उसने इसकी परवाह नहीं की थी और थोड़ी ही देर में सहज हो सका था।

इस बार उसके शरीर को उसने अपने अन्दर महसूस किया और हांफने लगा। यह उसकी मजबूरी है, सख्त मजबूरी।

कुछ ही देर पहले उसका शरीर जो कि बहुत क़ीमती और रहस्यमय लग रहा था अब निहायत मामूली लगा। ऐसा उसे हर बार लगता है और तब वह उदास हो जाता है।

काफी देर के बाद अब वह नीली साड़ीवाली औरत बेडौल और भद्दी शक्ल की लग रही थी। उसे उबकाई आने लगी थी।

उसकी निगाहें एकाएक अब उस भद्दी लगनेवाली औरत के पेट पर टिक गई थीं। वह चौंक रहा था।

'घड़ा-सा निकल आया! स्साला मालूम भी नहीं था हमें। कौन-सा महीना चढ़ा?' वह इकट्ठे पूछने लगा था।

वह चुप रही।

'किसका है?' उसने तेजी के साथ पूछा।

शुरू में वह चुप रही····

लेकिन एकाएक फिर झुंझलाने लगी थी, 'किसी का भी···'

झटके के साथ वह चद्दर से हट आया था और गोदाम की तरफ थूककर बहुत जल्द पतलून पहनने लगा था।

काफी ऊँची आवाज में उसने अपनी पुरानी गाली दुहराई 'धस्साली ऽऽऽ!' वैसे यह नितान्त मामूली और सादी थी।

...एकाएक भद्दी लगनेवाली औरत को उसने गौर से देखा और तब बहुत तेज चलकर अपने बिस्तर पर आ गया। हालांकि अब वहां दो कुत्ते लेटे हुए थे लेकिन बहुत सतर्कता से उनके बीच शरीफ़ आदमी की तरह लेटकर वह अपनी फटी हुई चद्दर तानने लगा था।

पारमिता

सबसे पहले उसने खिड़की के परदे गिरा दिये थे। ऐसा अक्सर हो जाता है कि कोई गुब्बारेवाला सामने से गुब्बारा नोचता हुआ निकल जाता है तो उसकी आवाज़ इस कमरे के खालीपन में एकाएक भयावह लगने लगती। परदे गिरा देने से कोई दीवार ज़रूर नहीं बन जाती कि वह अपने को बचा सके, लेकिन अब उतना डर नहीं महसूस होता।

परदा गिरा हुआ नहीं रहता तो कभी-कभी डबलरोटी वाला अजीब सी

निगाह से कमरे को घूरता रहता है। एक-आध बार कुछ रुककर कह भी जाता है—आज बड़ी ठंड है, बीबी जी।···और तब वह एकाएक पैडिल मारकर बहुत तेज़ी से आगे की तरफ निकल जाता।

···लेकिन बिस्तर पर अजीब क़िस्म की सलवटें और कमरे की अस्त-व्यस्तता जब एकाएक ख़तरनाक सी दिखाई पड़ती हैं, उसे लगता है, जैसे अब वह एकदम बिखर जाएगी। यह खतरा अब एक निहायत जरूरी तब्दीली बन गई, पहले एक मामूली अहसास भर था। ऐसे में परदा हटाकर बाहर की तरफ देखना अपने खिलाफ एक आक्रमण लगता है।

सामने की मेज़ पर अपनी किताबें रखकर उसने दराज़ खोल दिये थे। शुरू में वह अपने आस-पास देखती रही थी लेकिन बाद में यह क़तई गैरज़रूरी लगा था। उसे झुंझलाहट इस बात पर भी हो रही थी कि दराज़ बहुत आसानी से खुल गया था। अब यह एक तरह से ज़रूरी हो गया था कि कमरे के खालीपन के साथ दराज़ भी खुला हुआ हो।... लेकिन एकदम वह दराज़ के पास से हट आई थी। शुरू में इस तरह की मतली नहीं आती थी अब सारा दिमाग भयंकर रूप में घूम जाता है।

हिस्ट्री की किताब के बीच मंथली टेस्ट का रिजल्ट का कार्ड कुछ अलगाव के साथ एकाएक स्याह पड़ गया था। यही आखिरी 'एक्जाम' है, इसके बाद 'सीनियर केम्ब्रिज'।...लेकिन अब यहां कोई जगह नहीं रह गई कि पापा लौटकर दस्तखत कर सकें।···और इसकी अब क़तई ज़रूरत भी नहीं रह गई कि पापा इस पर किसी तरह दस्तख़त कर ही दें।

अब वह अपने या मम्मी के कमरे में जा सकती थी लेकिन किसी तरफ जाना ग़ैरज़रूरी लगा। यह अजीब बात है कि स्कूल से लौटने के बावजूद इस वक्त उसे थकान नहीं महसूस हो रही थी।

मन हुआ कि वह ज़ोर से चीखे—यह क्या हो रहा है मम्मी? तुम पागल

क्यों नहीं हो जातीं ? लेकिन चीखने के बजाय वह कैलेण्डर की रंगीन तारीखों को यों देख रही थी, जैसे वह एक खास क़िस्म की ज़रूरत पूरी कर रही हो।

रात को पापा लौटेंगे तो हाथ में बहुत सारे 'कॉमिक्स' होंगे और दबे पांव उसके कमरे में घुस कर वे बहुत हिफाजत से उन्हें टेबल पर छोड़ लेकिन चौंकने के लिए पापा की यह हरकत अब निहायत बेजान और मामूली महसूस होती है।...और रात को वे अपने कमरे का दरवाजा बन्द करके जब बत्ती बिना बुझाए ही सो जाएँगे तो महज वही कमरा नहीं, सारे घर के खालीपन में एक दहशत भी जुड़ जाएगी।

......लेकिन अब तो यह क़तई जरूरी हो गया कि सारा घर खाली लगता रहे और गुब्बारे वालों की रगड़ खाती आवाज से यहां चारों ओर एक बिखराव आ जाए।

...नींद खुल जाने पर भी तब आंखें खोल देना क़तई नामुमकिन और एक भयकर शरारत लगेगी।...और ऐसे में अपने को समेट कर सो रहने में जिस तीखेपन का अहसास लगातार होता रहेगा उससे छुटकारा नहीं मिल सकता। बहुत देर की स्थिरता के बाद अगर पापा की आंखों से उसकी आंखें मिल गईं तो उसके लिए एकदम खत्म हो जाने का कुछ भी बाक़ी नहीं रह जाएगा।...वैसे अंतिम परिणति के तौर पर कुछ और अब नहीं ही है।

आंखों में झूलते लाल डोरों में जो आग दिखेगी, उसका कुछ भी विकल्प नहीं हो सकता। ऐसे में महज चीखा जा सकता है बस; लेकिन उससे सिर्फ इतना ही हो सकेगा कि समूचे घर का खालीपन और भी भयंकर लगने लगेगा।

वह कैलेण्डर के पास से खिसक कर कोने की तरफ आ गई थी। यहां से

मन्त्री के कमरे का परदा हिलता हुआ साफ दिखता है। लेकिन सिर्फ इतना हिल जाने से कहीं कुछ भी फ़र्क नहीं पड़ता।

एकाएक मन में आया था कि अभी, बिल्कुल अभी अपने कमरे में पहुंच कर वह सारे 'कॉमिक्स' फाड़ दे।···और उन्हें एक पैकिट में अच्छी तरह बांध कर इस खुले हुए दराज़ में छोड़ दे। सुबह तक पापा देखेंगे तो बहुत मुमकिन है, उनकी आंखों के झूलते हुए लाल डोरे एकाएक स्याह और कमज़ोर पड़ जाएं।

आंखों में लाल डोरे झूलने के दिन पापा के पांवों की पेशियां एकाएक फड़कने लगती हैं और तब पिंडलियों में एक तीखा सा दर्द लगातार घण्टों उभरता रहता। उस दर्द के कारण वे कराहते जरूर नहीं लेकिन औंधे लेटकर घण्टों यों पड़े रहते जैसे वे बिल्कुल खाली हो गए हों। और यह सब हमेशा एकदम हो जाता है। कभी-कभी दर्द ज़्यादा तेज होने पर वे रातभर उसी तरह औंधे पड़े रहते और सुबह अपने को बिल्कुल कमज़ोर महसूस करते।

वह अपने को बहुत ज्यादा गर्म और उत्तेजित महसूस करने लगी थी। हालांकि ऐसे दिनों में पापा के खिलाफ इस तरह सोचना एक निहायत मामूली बात है।···लेकिन इससे तो अच्छा यही होगा कि पापा से कहा जाए—अब मम्मी को गोली मार दो पापा, वह जी नहीं सकती।

मम्मी के कमरे का हिलता परदा एकाएक भयानक लगने लगा था। अच्छा होता, इस वक्त अगर उस ओर से कोई शोर या दबी हुई आवाज़ सुनाई पड़ती। लेकिन मम्मी के कमरे से एक खालीपन के अलावा महज़ एक उदास सन्नाटा ही निकल सकता है। उससे कुछ भी फ़र्क नहीं पड़ता।

एकाएक उसे लगने लगा था कि अबकी बार अगर डबल रोटी वाला

फिर कुछ कह देता है तो वह चिन्दियों में बंट जाएगी। खिड़की के रास्ते अन्दर की तरफ देखकर अक्सर वह मुस्कुरा पड़ता है और तब बहुत तेजी के साथ पैडिल मारकर आगे की तरफ बढ़ जाता। बढ़ने से पहले झट से वह एक बार कनखिग्रों से अपने आस-पास अच्छी तरह देख लेता है। यह उसकी मजबूरी है, पाप की मजबूरी से ज़रा से फासले पर।...और पापा की तरह इसका कुछ भी विकल्प नहीं हो सकता। उसे अजीब सा लगने लगा था कि समूचे घर के खालीपन में इस कमरे की अस्तव्यस्तता जैसे बिस्तर की सलवटों में पूरी तरह धंस गई है। गुब्बारे वालों की रगड़ खाती आवाज की भयंकरता और इस कमरे की अस्तव्यस्तता में एक चुभता हुआ अहसास जरूर है लेकिन खिड़की के परदे का हट जाना एक दर्दनाक दृश्य है।...और अब तक वह खिड़की के ऐसे नंगेपन को नितांत सहज रूप में स्वीकार करती रही। पहली बार वह खुद अपने खिलाफ एक ज्यादती लगी, एक तेज लड़ाई भी।

कुछ ग़ौर से देखने पर पापा के कपड़ों पर बेहूदी सलवटें और भी तेज, और भी उभरती हुई दिख जाती हैं। ऐसी हालत में खुद को बचा पाना बहुत मुश्किल और करीब-करीब नामुमकिन सा होता है। कॉलर के आस-पास के हिस्सों में जो कुछ दाग दिखाई पड़ते हैं, वे आंखों में झूलते लाल डोरों की मजबूरी हैं।...और पापा इससे अब डर नहीं सकते। कमसे कम ऐसी हालत में तो हर्गिज नहीं।

......तब बीती रात लौटने पर खिड़की उसी तरह नंगी मिलती और अगली सुबह तक उसी तरह तब तक पड़ी रहती जब तक कि गुब्बारे वालों के गुजरने का वक्त नहीं हो जाता।

वह फिर मम्मी के कमरे के हिलते परदे की तरफ देखने लगी थी।... अब तो कहा ही जा सकता है—अब रात को जरूरत पड़ने पर मत

लौटा करना पापा, कुत्ते भूंकते हैं। खाली सड़क पर सुबह तक के लिए तुम्हारे जूतों के निशान पक्के हो जाते हैं।

एकदम वह सकपकाने लगी थी कि जैसे वह बहुत सारे अजनबी और अजीब किस्म के लोगों के बीच आ गयी हो। मम्मी की तरफ से कोई आवाज़ उसे मिलती तो कम से कम इस तरह के खतरों से वह उबर जाती। या अपने को इस क़दर परायी नहीं महसूस करती।

सुबह अखबार वाला आएगा तो समूची सड़क उसे अजीब तरह के धब्बों से भरी हुई मिलेगी। ये पापा के जूतों के निशान होंगे और तब समूची सड़क एकाएक बेहूदी लगने लगेगी। क़तई अर्थहीन भी।

वह अपने को अचानक कमजोर पाने लगी थी। ऐसी हालत में खुद को बचा पाना भी मुश्किल सा हो जाता है और तब कोई चारा नहीं रह जाता कि अपने अलावा किसी और के बारे में भी कुछ सोचा जा सके।

समूचे कमरे में सुबह आये पापा के उस नीली बुशशर्ट और बादामी ट्राउजर वाले दोस्त के ठहाके गोया बहुत देर बाद एकाएक गूंजने लगे थे। इन ठहाकों का अर्थ महज इतना है कि वे ठहाके हैं। और तब खिड़की के सामने वाला सड़क का हिस्सा भी बहुत भयानक लगने लगा था। ठीक गुब्बारे वालों की रगड़ खाती आवाज़ की तरह।

…और रात में काफी देर बाद वह पापा को छोड़ने आएगा तो कानों में कुछ फुसफुसाने के बाद जोरों का ठहाका लगाएगा और फिर कई दिनों के लिए एकाएक गायब हो जाएगा।

उस वक्त और इस वक्त के बीच अब फ़र्क ही क्या है……? ठीक उसी

तरह आखिर तक मम्मी के कमरे के परदे हिलते रहेंगे। समूचे घर के खालीपन के साथ दहशत जुड़ती रहेगी।......बस।

कुत्तों के भूंकने के बाद से लेकर अखबार वाले के आने तक सड़क में इस बीच हुए सारे परिवर्तन पापा की ढेर सारी मजबूरियों में से एक है।... आखिर में मौसम के पूरी तरह बदल जाने के बाद एक और शुरुआत होगी।.....और यह किसी दिन बस एकदम हो जायगा।

रात बहुत ज्यादा हो जाने पर मुमकिन है, पापा जूता बिना खोले ही बिस्तर की सलवटों के अन्दर धंस जाएं और तब सुबह तक के लिए अपनी पाशविकता के पुराने शिकार बनकर लगातार हारते रहें।...अब यह सारा का सारा पापा की गहरी मजबूरी है—विकल्पहीन।

......लेकिन अब तो कह ही दिया जाए—मम्मी को गोली क्यों नहीं मार देते पापा? वह जीकर क्या करेगी? और रात को जरूरत के दिनों में अब इतनी रात घर मत लौटना। सारी सड़क पर तुम्हारे जूतों के निशान पक्के होकर बैठ जाते हैं।

...उसे ताज्जुब सा होने लगा था कि पापा बत्ती जलते ही घर वापस आ गये। और इस वक्त उनकी आंखों में झूलते हुए लाल डोरे या उस तरह के कुछ भी नहीं थे। ऐसा लग रहा था कि जैसे खाली आंखों में उन्हें एक खास क़िस्म की तीखी सी जलन लगातार महसूस हो रही हो। इस वक्त पेशियां फड़क नहीं रही थीं। और कमरे की अस्तव्यस्तता के बीच फिर से गुब्बारे वालों की रगड़खाती सी आवाज़ फैलने लगी थी।

वह चुप थी और बजाय कुछ कहने के एकाएक कांपने लगी थी। यहां से मम्मी के कमरे के परदे अब क़तई दिखाई नहीं पड़ रहे थे लेकिन ऐसा लग रहा था गोया परदा उसी तरह बराबर हिलकर माहौल की हवा बहुत भारी करता जा रहा हो।

पापा के सिर की दोनों तरफ की नसें उभर आई थीं और समूचा चेहरा तमतमा कर सुर्खियों में ढल गया था। वह अपने कमरे में जाकर दराज में से 'ऐस्प्रो' उठा लाई थी। अपनी तकलीफ के दिनों के लिए बहुत हिफाजत से रखी हुई चीजें अब पापा की एक खास जरूरत थीं।

पापा के पांवों से जूते उतार कर उन्हें उसने पहली बार इत्मीनान से सोते हुए पाया था। उनके ऊपर चादर डालकर वह अपने कमरे में आ गई थी। यहां से मम्मी के कमरे का परदा जरूर दिखाई नहीं पड़ता है लेकिन वह आश्वस्त हो सकी थी कि अब यह परदा इस तरह खालीपन में नहीं हिला करेगा।